मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १३० • फरवरी-२०१८

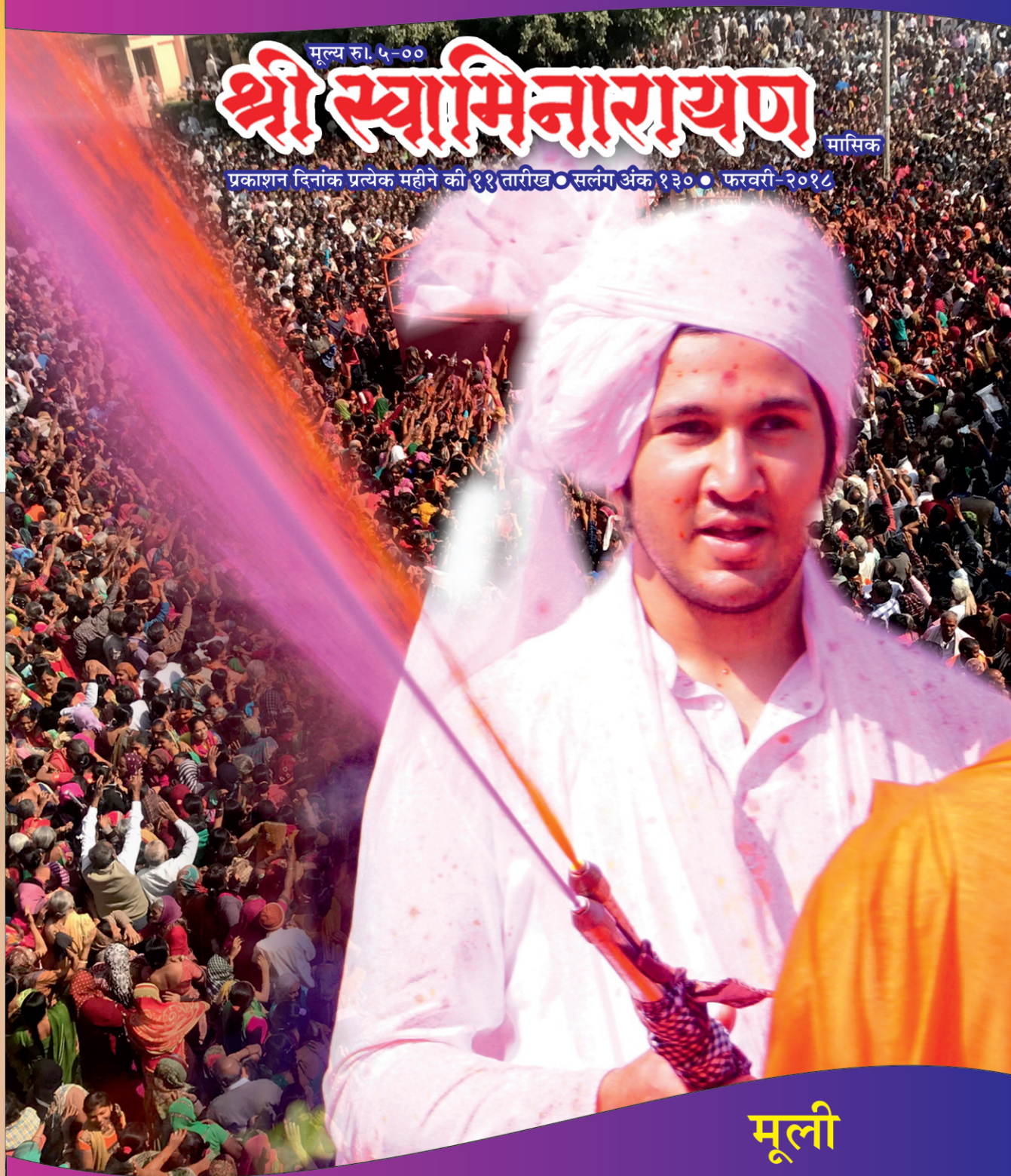

मूली

वसंत पंचमी उत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के सानिध्य टोरडा में स.गु. गोपालानंद स्वामी के जन्म स्थल का उद्घाटन महोत्सव

प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव के पूजारी अ.नि.ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी के गुणगान की सभा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १३०

फरवरी-२०१८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	गंगाजी की कथा	०६
०४.	भक्ति धर्म के पुत्र के शरण में	०८
०५.	आवश्यकता, तीव्रता और साहस रखना। प.पू. बड़े महाराजश्री	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१४
०८.	भक्ति सुधा	२०

अस्मदीयम्

..... बाद श्रीजी महाराज कहे ये हमारी आज्ञा है जो, हरिभक्त मात्र को श्री नरनारायण की मूर्ति कागज में लिख देगे । उन्हें पूजिए, और ये पूजा सभी शास्त्रो का प्रमाण है.... इसे हमारी आज्ञा मानकर आप सभी नरनारायण की पूजा करेंगे तो हमारे और नरनारायण के मध्य शुद्धता से मन-मिलन होगा । वह हम नरनारायण से कहे, हे प्रभु जो पंच वर्तमान में रहकर हमारी प्रदत्त जो आप की मूर्ति पूजे, उसमें आप अखण्ड निवास करके रहियेगा..... आप सभी निश्चित रुप से मानिए यह मूर्ति श्री नरनारायण देव की ही है । ऐसा मानकर मूर्ति किसी भी दिन पूजा विहीन नही रखना देश में ..... (ग.प्र.प्र. ४८

.... इसलिए इस संसार में दृढ ब्रह्मचारी तो एक नरनारायण ऋषि है और् उसी नरनारायण का हम सभी का सहारा है, उसके प्रताप से ही धीरे-धीरे उस नरनारायण की भजन करके, अपने भी इसी समान निष्कामी बनेगे.....(ग.प्र.प्र. ७३)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के १९६ के बृहद् पाटोत्सव प्रसंग में उपरोक्त वचनामृत का नित्य पान करना चाहिए । ये स्वयं सर्वोपरी श्रीहरि के वचनामृत है जो अपने लिए सर्वोपरी वचन है । इस लिये इसका प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए । इसी में अपनी श्रेष्ठता, कल्याण और मंगल है ।

श्री नरनारायणदेव के समक्ष जो कोई भक्त या मुमुक्षु जीव, श्रद्धा और प्रेमपूर्वक दर्शन करके जो कोई शुभ मनोरथ संकल्प करेगा वह श्रीनरनारायणदेव अवश्य पूर्ण करेंगे ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१८)

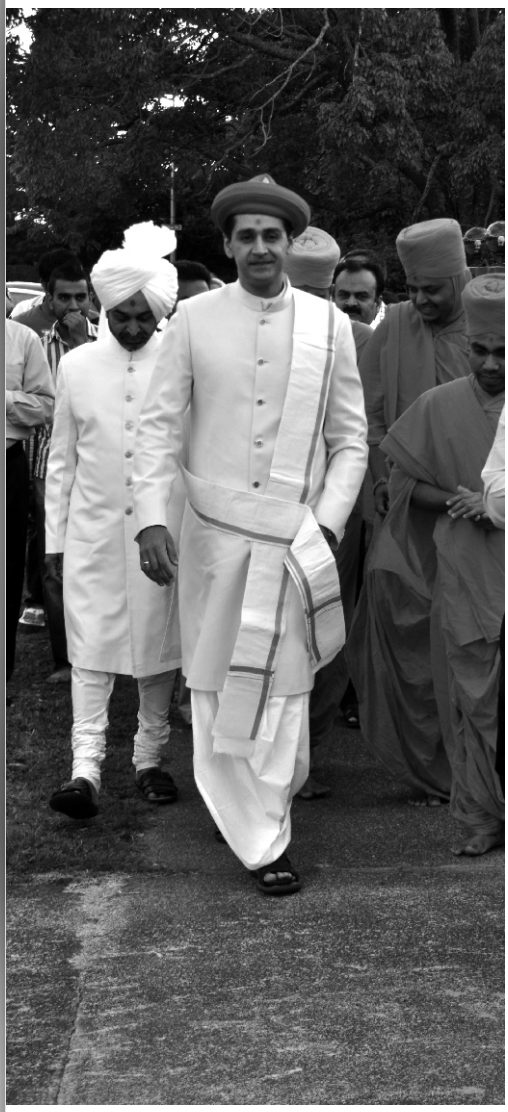

३० से २ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज आगमन वहाँ से मांडवी-कच्छ कन्या छात्रावास के उद्घाटन प्रसंग में आगमन।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर समौ कथा उद्घाटन के प्रसंग में आगमन।

६ घनश्यामनगर (नवीन धनाला - मूली प्रदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर उद्घाटन प्रसंग में आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा उद्घाटन समारोह प्रसंग । श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा नूतन मंदिर स्थापना मुहूर्त के प्रसंग में आगमन।

१० से १८ आस्ट्रेलिया सिडनी धर्म प्रचार हेतु आगमन।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा मू.अ.पू.स.गु. गोपालानंद स्वामी जन्म स्थल उद्घाटन प्रसंग में आगमन।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी उत्सव प्रसंग में आगमन।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर अलीणा (कठलाल) नूतन मंदिर के उद्घाटन प्रसंग में आगमन।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोरणा (मूली प्रदेश ता. लिम्बडी) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में आगमन।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) उद्घाटन प्रसंग में आगमन वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में आगमन।

३१ से ६ फरवरी अमेरिका में ज्योर्जिया टीफोन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०१८)

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी उत्सव प्रसंग में आगमन।

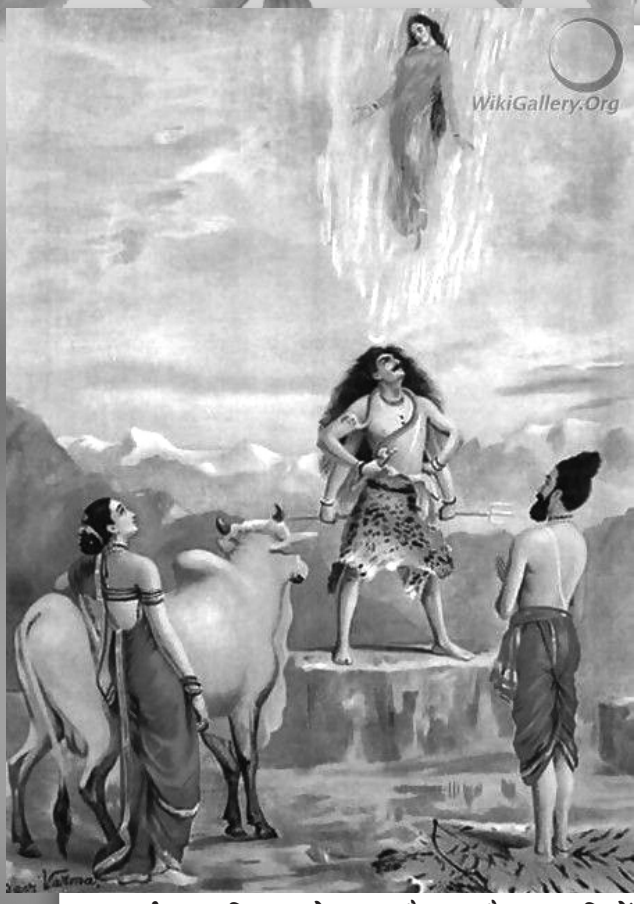

गंगाजी की कथा

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

पर्वतराज हिमालयके एक सौ पुत्र और नव पुत्रियों वाला परिवार था । उसमें से सबसे बड़ी पुत्री का नाम 'गंगा' था । दूसरी पुत्री के रुप में दक्ष महाराज के यज्ञ में शरीर त्याग करके हिमालय के पुत्री रुप में स्वयं जगदम्बा देवी ''पार्वतीजी'' प्रगट हुई ।

गंगादेवी एक बार नारदजी के मुख से शिव चरित्र की कथा सुनी उसी दिन से शिवजीको पति के रुप में प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न हो गयी । भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिये कठिन तपस्या के हेतु पार्वतीजी भी शिव को पति रुप में प्राप्त हेतु ''कोटि जनम लगी गरड हमारी वरवु शंभू अरु रहु कुमारी'' इस तरह की दृढ प्रतिज्ञा लेकर तपस्या करने लगी । इसमें गंगा और पार्वती को नारदजीने दोनो को एक पति की दृढ इच्छा को बताया । उसी दिन से दोनो बहनो के मध्य ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो गया । स्वयं की साधना सफल हो तथा बहन की साधना में विध्न पैदा हो, ऐसे विचार की कल्पना करते हुए । पार्वतीजी किसी भी स्तर पर भोले जी उन्हे प्राप्त हो ऐसी इच्छा के साथ गंगा की तपस्या में अवरोधआये ऐसा प्रयास करने लगी ।

पार्वती देवी की तपस्या पूर्ण हो चुकी थी । भोलेनाथ के साथ विवाह हो चुका था । गंगादेवी की तपस्या पूर्ण नहीं हुई थी । गंगादेवी की कठोर तपस्या पूर्ण नही हुई थी । गंगादेवी की कठोर तपस्या देखकर दुर्वासा ऋषि उन्हें वरदान देने के लिए आ रहे थे । ऐसा संकेत मिलते ही गंगाजी जहाँ तपस्या कर रही थी उनके सामने पानी और कीचड़ वाला बनाकर रुकावट डालने का प्रयत्न किये । दुर्वासा ऋषि जब नजदीक आ रहे थे वे कीचड़ में फिसल गये । क्रोधित होकर श्राप दिये की हे गंगा तुम मेरे आने वाले मार्ग में जल डालकर रास्ते में विध्न डाला है इस लिए तुम जल स्वरुप में हो जाओ !!

तुरंत गंगादेवी जागी तथा दुर्वासा के चरणो में प्रणाम किया हाथ जोडकर विनय करके बोली, महात्मा में निरपराधहूँ । आप मुझ निर्दोषी को दण्ड दिये है । मैने मार्ग में जल डाला ही नही है । दुर्वासाजी ने ध्यान में जाकर देखा की ये कर्म पार्वती देवीने किया है । पुनः पार्वती जी को श्राप दिये कि तुम्हे शिवजी पतिस्वरुप तो प्राप्त हुए है लेकिन शिव द्वारा तुम्हे गर्भ धारण नहीं होगा ।

निर्दोष गंगा को वरदान दिये कि तुम जलरुप बनोगी तो भी भगवान भोलेनाथ तुम्हें मानस पत्नी के रुप में स्वीकार करेगे और जटा में स्थान प्रदान करेगे । और गर्भ भी धारण करोगी त्रिलोक को पवित्र करोगी । त्रिलोक के सभी लोग तुम्हारे जल में स्नान करेगे तथा पाप से मुक्त होगे । तथा भगवान भोले से कभी अलग नहीं होगी ।

दोनो देवियो को दुर्वासा मुनि श्राप और आशीर्वाद देकर वापस चले गये । दुर्वासा के श्राप से बनी

जलस्वरुपा हिमालय पुत्री को ब्रह्माने स्वर्ग में अपने कमंडल पात्र में स्थान दिये । जलस्वरुपा देवी शिवजी को प्राप्त करने के लिए अनवरत शिव स्मरण करती रही ।

एस समय सगर राजा के साठ हजार पुत्रो ने अश्वमेघ यज्ञ के बारे में निर्दोष कपिलमुनि को परेशान किये मुनि के श्राप से साठ हजार पुत्र भस्मीभूत हो गये । अश्वमेधयज्ञ अपूर्ण रहा लेकिन सगर के एक पुत्र जो यज्ञ में बैठे थे उसके उपरांत सभी पुत्रो की अधोगति हुई ।

सगर राजा ने कपिलमुनी से क्षमा माँगकर पुत्रो के कल्याण के लिए उपाय पूछे । कपिलमुनि ध्यान अवस्था में देखकर बताया राजा आप के सभी लडको का एक साथ कल्याण करना हो तो एक मात्र उपाय है । स्वर्ग में ब्रह्माजी के कमंडल में स्थित हिमालय पुत्री गंगा देवी जल रुप में है । जिसका विष्णुजी के चरण का स्पर्श हुआ है । उनका पृथ्वी पर अवतरण हो और गंगाजल के स्पर्श से आप के पुत्रो की अस्थियो की राख स्पर्श हो तो उनके पाप-अपराधगंगा देवी की तपस्या के प्रभाव से पवित्र होकर मुक्ति को प्राप्त होगे । लेकिन गंगादेवी को शिवजी मिले ऐसी मनोकामना है । इसलिये भोले नाथ खुश हो तभी सम्भव है ।

सगर राजा अपने पुत्रो के उद्धार के लिए गंगा देवी और शिवजी की तपस्या करने के लिए बैठ गये । अपना बचा जीवन तपस्या में व्यतीत किए । इनके पश्चात इनका पुत्र ''असमंजय'' भी तपस्या करते-करते जीवन बिताए । लेकिन ये कार्य फिर भी अपूर्ण रहा ।

सगर राजा की पाँच पीढीयोंने शिवजी और गंगा देवी को प्रसन्न करने में जीवन अर्पण कर दिया । पांचवी पीढ़ी में राजा भगीरथ पैदा हुआ । वे तपस्या करने लगे तब गंगादेवी और शिवजी प्रगट हुए और भगीरथ राजा पर खुश होकर बोले छः पीढीयों की तपस्या के पश्चात हम खुश हुए है जो मनोकामना है उसे हमे बताईए !

राजा भगीरथजी प्रार्थना करके बोले हे भोलेनाथ ! सदाशिव ! आपतो संसार के मालिक हो । हमारी गलती से पूर्वजो की अधोगति हुइ है । उनका उद्धार करने के लिए आप प्रभु गंगादेवी को धारण करे और गंगा के प्रवाह को पृथ्वी पर प्रवाहित करे जिससे हमारे पूर्वजो का उद्धार हो और जगत का कल्याण भी हो । तब जाकर भोलेनाथ ने गंगाजी को जटा में धारण किये । कैलास पर्वत से गंगादेवी का पृथ्वी पर अवतरण हुआ । अलकनंदा, मंदाकिनी इत्यादि अनेक धाराये अनेक रास्ते में आने वाले अनंत जीवो का कल्याण (पवित्र) करती हुई भगवान विष्णु चरणस्पर्षा और भोलेनाथ की ''मानस'' पत्नी के रुप में पृथ्वी पर अवतरित हुई । ''हर हर गंगे'' के रुप में संत एवम् ऋषियोने शिव पत्नीके रुप में प्राप्त किया ।

सगर राजा के साठ हजार पुत्रो की भस्म को गंगाजल के स्पर्श होने से सभी पाप से मुक्त होकर दिव्य चर्तुर्भुज रुप लेकर मुक्ति को पाये और गंगादेवी पापनाशिनी कहलायी ।

हिमालय से निकलने वाला गंगाजी की धारा शिवजी की जटा में से आज भी प्रवाहित हो रही है । उस के स्नान-स्पर्श से ही पाप में से मुक्ति मिल जाती है ।

दुर्वासा मुनि का गंगादेवी को एक दूसरा भी वरदान मिला है कि जो भी आदमी श्रावण महीने या शिवरात्रि के दिन गंगाजल को कलश में लेकर प्रतिष्ठित शिवलिंग पर चढायेगा उसे करोडो गुना पुण्य प्राप्त होगा और उसे भक्ति और शक्ति प्राप्त होगी ।

गंगा पुत्र के रुप में गंगाजीकी गोद से कार्तिक स्वामी प्रगट हुए थे । गंगाजी के कठोर तपस्या का प्रताप लम्बे समय तक गंगा जल की प्रभावित करेगा । जो कोई स्पर्श करेगा यह तुरंत पाप से मुक्ति प्राप्त करेगा । गंगादेवी मानस पत्नी होने के कारण मानसिक गंगा स्नान स्मरण मात्र से स्नान शास्त्र प्रमाणित माना जाता है ।

गंगाजी शिव की जटा मे से सप्तधारा के रुप में सात धाराओ में प्रवाहित होती है । उसमें से कुछ धारायें गुप्त रुप से हिमालय की गोद में विलीन हो गई है । गंगाजी की ससुराल और पीहर पक्ष हिमालय में ही है । कैलास से निकलकर हिमालय (पिता) की गोद में अत्यन्त तीव्र वेग से बहती है । भारत से कई जगहो पर गुप्त गंगा तीर्थ के रुप में प्रगट हुई है । भारत की भूमि अति पवित्र मानी जाती है । उसका एक कारण गंगा के जल प्रवाह का स्पर्श होना है । हिमालय की पुत्री तथा

पेईज नं. १०

भक्ति धर्म के पुत्र के शरण में

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

इति सत्संगिजीवने धार्मिकस्तोत्रम् । सत्संगिजीवन पंचम् ५ प्रकरण अध्याय-६६, श्लोक १२ थी

श्रीमद् सत्संगिजीवन के पाँचवे पाठमें सर्व अवतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने शतानंद मुनि के प्रश्नो का उत्तर देने के निमित्त सम्पूर्ण संसार को सांख्ययोग और योगशास्त्र का सत्य सनातन सही अर्थ बताये इसको सुनकर अति-खुशी से गदगद सभी की तरह से स्वयं शतानंद मुनि भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो की वंदना करके इस प्रकार स्तुति और प्रार्थना किये है । इस प्रार्थना को सुनकर अति खुश होकर परमात्मा भगवान श्रीहरि मनवांछित वरदान दिये है और जो कोई भी इस स्तोत्र (अष्टक) का पाठ करेगा या गायन करेगा उस पर खुश होकर उसके सभी मनोरथ पूर्ण करने का वरदान श्रीहरि अवश्य देगे । इस स्तुति के शब्दो का अर्थ जिसमें सांख्ययोग और योग शास्त्र के जो रहस्य गूढ है उसे सरल और संक्षेप में समझना हो तो इस स्तोत्र को हृदय में धारण करने से और प्रतिदिन गाने से समझा जा सकता है । इस अष्टक के शब्दो को समझने का प्रयास करे ।

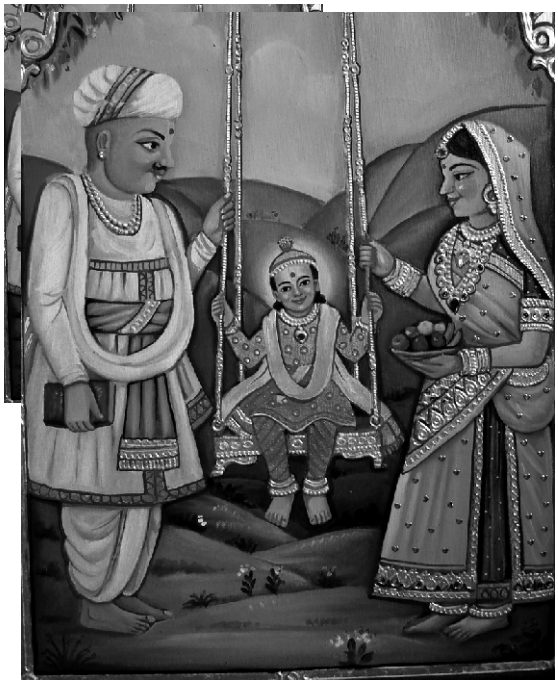

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् शतानन्दमुनि रचित् ॥

श्रीवासुदेव विमलामृतधामवासं नारायणं नरकतारणनामधेयम् ।
श्यामं सितं दविभुदमेव चतुर्भु च त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥१॥
शिक्षार्थमत्र निजभक्तिमतां नराणामेकान्तधर्ममशिलं परिशीलयन्तम् ।
अष्टांगयोगकलनारश्च महाव्रतानि त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥२॥
श्वासेन साकमनुलोमविलोभवृत्त्या स्वान्तर्बहिश्च भगवत्युरुधा निजस्य ।
पूरे गतागतजलाम्बुधिनोपमेयं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥३॥
बाह्यान्तरिन्द्रियगणश्वसनाधिदैववृत्त्युद्वस्थितिलयानपि जायमानान ।
स्थित्वा ततः स्वमहसा पृथगीक्षभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥४॥
मायामयाकृतितमोऽशुभवासनानां कर्तुं निषेधमुरुधा भगवत्स्वरुपे ।
निर्बीजसांख्यमतयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥५॥
दिव्याकृतित्वसुमहस्त्वसुवासनानां सम्यग्विधि प्रथयितुं च पतौ रमायाः ।
सालम्बसांख्यपथयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
कामार्ततस्करनटव्यसनिद्दविषन्तः स्वस्वार्थसिद्धिमिव चेतसि नित्यमेव ।
नारायणं परमयैव मुदा स्मरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥७॥
साध्वीचकोरशलभास्तिमिकालकण्ठकोका निजेष्टविषयेयु यथैव लग्नाः ।
मूर्ति तथा भगवतोऽत्र मुदातिलग्नं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥८॥
स्नेहास्तुरस्त्वथ भयातुर आमयावीं यद्वत्क्षुधातुरजनश्च विहायमानम् ।
दैन्यं भजेयुरिह सत्सु तथा चरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥९॥
धर्मस्थितैरुपगतैर्बृहता निजैक्यं सेव्यो हरिः सितमहः स्थितदिव्यमूर्तिः ।
शब्दाय्यरागिभिरिति स्वमतं वदन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥१०॥
सद्ग्रन्थनित्यपठनश्रवश्रीदिसक्तं ब्राह्मी च सत्सदसि शासतमत्र विद्याम् ।
संसारजालपतिताखिलजीवबन्धो त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥११॥

श्रीवासुदेव विमलामृतधामवासं नारायणं नरकतारणनामधेयम् ।
श्यामं सितं दविभुदमेव चतुर्भु च त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

हे नारायणमुनि, निर्मल अक्षरवाम में सदैव निवास करने वाले हे नरनारायण ऋषि जैसे नाम वाले सर्वत्र व्यापक होने से हे वासुदेव भगवान आपको स्वामिनारायण, नरनारायण इत्यादि नाम से स्मरण, कीर्तन मात्र से नरक जैसा दुख भी समाप्त हो जाता है, मेघ समान श्याम वर्ण वाले घनश्याम सदैव सफेद कांतिवाले भी है आप ही द्विभूजाधरी आप ही चर्तुभुज धारी भी है । ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(१)

शिक्षार्थमत्र निजभक्तिमतां नराणामेकान्तधर्ममशिलं परिशीलयन्तम् ।
अष्टांगयोगकलनारश्च महाव्रतानि त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

जिसके हृदय में सर्वश्रेष्ठ भगवान श्री स्वामिनारायण की एकत्व भक्ति है ऐसे प्यारे भक्तो को शिक्षा देने के लिए आप स्वयं आचरण करके बताने वाले हो जिस किसी को भी अक्षरधाम में आप के साथ रहना हो उसे आप की तरह ही रहना होगा। ऐसी बात को सिखाने के लिए स्वयं एकत्व धर्मपालन और अष्टागं योग तथा उनके सभी अंग, यम, नियम आदि आठ कला और नेति घोती, भक्तिका, कुंजर, कालभागे, कुंडलिनी की शक्ति त्राटक इन आठ क्रियाओ को स्वंय करते है और। निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य तथा एकादशी का व्रत इन महाव्रतो को आजीवन करते है । ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(२)

श्वासेन साकमनुलोमविलोभवृत्त्या स्वान्तर्बहिश्च भगवत्युरुधा निजस्य ।
पूरे गतागतजलाम्बुधिनोपमेयं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥३॥

योग का अनुसरण करते हुए जब आप श्वास शरीर के अंदर लेते हुए स्थिर करते है उसी समय प्रतिलोभ वृत्ति से भगवान की मूर्ति को अंदर धारण करते है। तब अनुलोम योग से आँख के सामने भगवान का रुप धारण करते है। इस तरह दोनो वृत्तियों को भगवान के रुप में रखते हैं। जैसे समुद्र में ज्वार और भाटा आता है। और पानी वेग से आगे बढता है। भाटा आने पर पानी तेजी से उत्तर जाता है। उसी प्रकार मन की खराब वृत्तियाँ बाहर निकल जाती है। ये सात्विक क्रिया प्रभु को स्मरण करके रखना चाहिए। ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(३)

बाह्यान्तरिन्द्रियगणश्वसनाधिदैववृत्त्युद्वस्थितिलयानपि जायमानान ।
स्थित्वा ततः स्वमहसा पृथगीक्षभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥४॥

पाँच कर्म इन्द्रियों और पाँचज्ञान इंद्रियो इन दस बाहर की इंद्रियो के समुह और मन, बृद्धि चित्त और अहंकार ये चार अंतःकरण की इंद्रियो के समूह और पंच प्राण और उसके अधिकता देवताओ के गुण स्वभाव के अनुसार गुर्ण कार्य रुप में परिवर्तित उन सभी उत्पत्ति, आधार लय से विलक्षण होते हुए अलग स्वरुप के प्रताप से अलग दृष्टा हे। ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(४)

मायामयाकृतितमोऽशुभवासनानां कर्तुं निषेधमुरुधा भगवत्स्वरुपे ।
निर्बीजसांख्यमतयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥५॥

परमब्रह्म परमात्मा के स्वरुप में कभी माया से उत्पन्न पंच विषयो और वैभव के उपभोग की कामना अर्थात् अशुभ कामना तथा उसी प्रकार की क्रिया का आकर्षक आकार का माया जन्य हूँ और हमारा रुप अज्ञान तथा उसी प्रकार माया वाले गुण से युक्त काम और क्रिया का सदैव निषेधसमझाने के लिये सांख्य और योग प्रकार की युक्ति अर्थात इस रहस्य को स्वयं के जीवन में अपने अच्छे आचरण से संसार को ज्ञान देने वाले ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(५)

दिव्याकृतित्वसुमहस्त्वसुवासनानां सम्यग्विधि प्रथयितुं च पतौ रमायाः ।
सालम्बसांख्यपथयोगसुयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥६॥

सर्वत्र ऐसे रमापति अर्थात् लक्ष्मीपति भगवान श्री वासुदेवनारायण का रुप दिव्याकृति है । सबसे उच्च तेजस्वी है। सभी जीवो को माया के बंधन से मुक्त करा के अत्यन्त कल्याणरुपी रुप सत्य संकल्प है । जिसमें दया और कृपा करने का सदैव गुण है। अपने भक्तो द्वारा अर्पित सेवा को स्वीकार करने वाले है। वे स्वभाव में बदलाव लाने वाले सांख्य मत और योग मत के सही सिद्धान्त को स्वयं के जीवन में धारण करने वाले है। ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(६)

कामार्ततस्करनटव्यसनिद्दविषन्तः स्वस्वार्थसिद्धिमिव चेतसि नित्यमेव ।
नारायणं परमयैव मुदा स्मरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥७॥

संसार के कामी जीवो चोरी वृत्तिवाले नृत्य करने वाला नट व्यसन से ग्रसित और द्वेष करने वाला हमेशा अपने स्वार्थ सिद्धि में लिप्त अपने मन में अनायास ही आनंदित होकर विषयो को स्मरण करता है। उसी प्रकार अत्यंत खुशी के साथ श्री नारायण के स्वरुप में सदा तल्लीन, स्वयं के शिष्यो को सच्चा उपदेश देने वाले हे ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(७)

साध्वीचकोरशलभास्तिमिकालकण्ठकोका निजेष्टविषयेयु यथैव लग्नाः ।
मूर्ति तथा भगवतोऽत्र मुदातिलग्नं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

उत्तम चरित्र वाली सति स्त्री जैसे पतिव्रता धर्म का पालन करती है। चकोर पक्षी जैसे चन्द्रमा को निहारता है। पतिंगा अग्नि के प्रति प्रेम, मछली जलानुरागी, मोर बादल की गडगडाहट से, चकवा पक्षी चकवी के प्रति आकर्षित होता है। उसी प्रकार आप के सर्वप्रिय श्री वासुदेवनारायण जो आप के हृदय में निवास करते है तथा आप अपने शिष्यो को उनके प्रति अनुरागित करते है ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(८)

स्नेहास्तुरस्त्वथ भयातुर आमयावीं यद्वत्क्षुधातुरजनश्च विहायमानम् । दैन्यं भजेयुरिह सत्सु तथा चरन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपदये ॥९॥

स्नेहातुर अर्थात प्रेम में पागल प्रेमी अपने प्रेम में, भयातुर अर्थात जिससे डर पैदा हो, रोग से डरा रोगातुर जो कटिन रोग से ग्रस्त हो डॉक्टर के प्रति प्रेम रखता है। भूखा है जिसे अन्न देकर पूरा करता है, सम्मान लोभ त्याग कर दीन भाव से रहता है ऐसे भक्त जो भगवान और संतो के सामने रहे ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(९)

धर्मस्थितैरुपगतैर्बृहता निजैक्यं सेव्यो हरिः सितमहः स्थितदिव्यमूर्तिः । शब्दाव्यरागिभिरिति स्वमतं वदन्तं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपदये ॥१०॥

शास्त्रो में समर्पित स्वयं के वर्ण आश्रम धर्म में हृदयपूर्क रहकर और सूक्ष्म, स्थूल के कारण तीनो देहो से विलक्षण ऐसे ब्रह्मस्वरुप होकर, अर्थात स्वयं को एकाकार ब्रह्म रुप अक्षय मुक्त समझाकर पंच विषयो में वैराग्य लेकर स्वयं को परम अतिश्वेत दिव्य ज्योति के बीच में अर्थात् अक्षरधाम में दिव्य सिंहासन उपर विराजमान दिव्य साकार मूर्ति श्रीहरि को भक्तो द्वारा सदैव सेवा करनी चाहिए। ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(१०)

सद्ग्रन्थनित्यपठनश्रवश्रीदिसक्तं ब्राह्मी च सत्सदसि शासतमत्र विद्याम् । संसारजालपतिताखिलजीवबन्धो त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपदये ॥११॥

सत्य शास्त्रो को प्रतिदिन अध्ययन करना चाहिए। उसको सुनना चाहिए और शास्त्र के दिये उपदेशो का पालन करना चाहिए। ऐसे ब्रह्म विद्या का उपदेश सत्पुरुषो परमज्ञानी और एकांतवासी भक्तो की सभा में देने वाले और माया-मोह के जाल में लिप्त सांसारिक जीवो की एक मात्र बंधु ऐसे भक्तिमाता और धर्मपिता के सुपुत्र श्रीहरि मैं आपकी शरण में हूँ(११)

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

भगवान विष्णु के चरण स्पर्श, भगवान शिव की जटा से उत्पन्न महाशक्ति आध्यात्मिक साक्षात् सम्पत्ति है। आज विश्वभर के वैज्ञानिको ने स्वीकार कर लिया है कि दुनिया में प्राप्त जल से श्रेष्ठ जल गंगा जल है। जो तत्व गंगा जल के पाये जाते है वे दूसरे जल मे नहीं मिलते है। इसका संग्रह करने पर भी इसको जीव खराव नहीं कर सकता है।

भगवान श्री नीलकंठवर्णीजी गंगा में स्नान किये तभी साक्षात् गंगादेवी प्रगट होकर प्रार्थना की हे प्रभु ! आज हमारी तपस्या पूर्ण हुई। आप के चरणो का स्पर्श हुआ अब मुझे किसी का पाप स्पर्श नहीं करेगा।

भगवान सदाशिवने गंगादेवी को वरदान दिये कि मानस पत्नी के रुप में मस्तक पर रखुँगा। मेरा पुत्र आप के गर्भ से होगा मेरा नाम गंगाधर कह लायेगा। आप का जल शिवरात्रि या श्रावण में मेरे लिंग पर जो कोई चढायेगा उसे करोडो गुना फल मिलेगा। हर हर गंगे कह के जो लोग बोलेगे उनके पाप मिट जायेगे। जीव मृत्यु के बाद शरीर की अस्थि या राख आप के स्पर्श से पाप मुक्त हो जायेगी।

गंगा स्नान से पहले गंगा उत्पति की कथा जो सुनेगा, स्मरण करेगा उसे शास्त्र संमत पुण्य काल की प्राप्ति होगी।

हिमालय से निकलकर पृथ्वी पर लाने की योजना बताने वाले प्रेरक महात्मा कपिलमुनि का आश्रम गंगा सागर संगम तक (कोलकता) तक का मार्ग पूर्ण करके सम्पूर्ण भारतवर्ष को पवित्र करती है।

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी स्वामी स.गु. राजेश्वरानंदजी गुरु ब्रह्मचारी स्वामी हरिप्रियानंदजी माघ सुद-५ वसंती पंचमी (शिक्षापत्री जयंती) को दिनांक २२-१-२०१८ सोमवार के शुभ दिन मूली धाम में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान का अखण्ड स्मरण करते हुए अक्षरवासी हुए है। जिसके अक्षरवास से समग्र श्री नरनारायणदेव देश और उनेक शिष्य मंडल को बड़ी क्षति हुइ है। श्रीहरि के चरणो में यह प्रार्थना है कि उन्हें निजधाम मे सुख-संतोष मिले और उनके शिष्य मंडल को धैर्य और बल प्रदान हो।

आवश्यकता, तीव्रता और साहस रखना । प.पू. बड़े महाराजश्री

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

परमपूज्य लालजी महाराजश्री के २० वें जन्म उत्सव प्रसंग में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धर्म के प्रचार के उद्देश्य से आस्ट्रेलिया में होने के कारण परम पूज्य बड़े महाराजश्री सभा में उपस्थित होकर दिव्य सुख को प्रदान किये । सभा का संचालन शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजीने प्रसंगोचित बोला कि ''मूलधन से अधिक व्याज प्रिय होता है'' इस संसार की कहावत अनुसार प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभा में उपस्थित होकर सभी को सुखी कर दिया । स्वामी के इस वाक्य के उपलक्ष्य में बड़े महाराजने कहा,

हमारे लिये लालजी महाराजश्री पूँजी है । उसी प्रकार आप के लिए संत पूँजी समान है । इन को बचा के रखना । सत्संग जैसे आप आश्यकता रखते है और लगाव होता है । वही सत्संग में आगे बढता है । सत्संग में हरि भक्त लोग संत की आवश्यकता रखते है, संत और हरिभक्त आचार्य की आवश्यकता रखता है और हम सभी नरनारायणदेव की आवश्यकता रखते है । दूसरा, उत्साह, उत्साह किसका ? महाराज की आज्ञा पालन का उत्साह रखना । और तीसरी बात साहस, नरनारायणदेव (गद्दी स्थान) कोई खराब कहे उसे नही स्वीकारना इसको साहस कहते हैं ।

महाराजने जब क्षेत्र का विभाजना किया तब रामप्रतापजी दादा कुछ उदास हो गये । महाराज उदास होने का कारण पूछे तब दादाजी बोले दूसरा तो कुछ नही अहमदाबाद भाग में कच्छ, राजस्थान में तो सूखा प्रदेश अधिक है यहाँ पर प्रशासनिक व्यवस्था कैसे की जायेगी ? जब कि दक्षिण भाग में हरियाली-समृद्धि और स्वयं लक्ष्मीजी वडताल में निवास करती है । तभी महाराजजीने कहा हम आप के साथ रहेगे । यह बात अधिक प्रसिद्ध है आप सभी को ज्ञात भी है कोई कपोल कल्पित बात नही बल्कि शास्त्रो में लिखी हुई बात है । महाराज की जो बात कही है वह वर्तमान समय में दिखाई दे रही है । आज अहमदाबाद क्षेत्र में सुख, समृद्धि प्रगति और शांति है । वहाँ के संतो ने हरिभक्तो को विदेश जाने के लिये प्रेरित किया और आज हरिभक्त लोग अत्यन्त सुखी है ।

महाराजने हम लोगो को भी आज्ञा किये है कि संतो का सम्मान करना चाहिए इस देश में पहले से ही संतो को सम्मान मिलता रहा है । इस बात को दुहराते हुए प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने पिता अहमदाबाद गद्दी के पांचवे आचार्य प.पू. देवेन्द्रप्रसादजी ने बिमार संतो की सेवा का दो विस्तार पूर्वक उदाहरण दिये । और वे उस समय स्वयं लालजी रुप में हो ऐसा रसप्रद सस्मरण को याद किये ते ।

विदेश में भी आज सत्संग के नियम सुंदर रुप से निभाये जाते है । इस बारे में अपने परिवार की बात करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री बताते है कि हमारी पुत्री बिन्दुराजा अमेरिका में निवास करती है । उसके दोनो पुत्र (सौम्य और सुव्रत) १४ वर्ष के समान उम्र वाले जिसका भी जन्म वही हुआ है , उसकी एक बच्चे के साथ मित्रता है । मित्रता इतनी अच्छी है कि वह लडका कभी कभी बिन्दु राजा के घर पर रात्रि में भी रुक जाता है । इसमें एक दिन वह पूजा की पेटी भूलकर अपने घर चला गया । १० से १५ दिन तक पूजा पाठ नही किया । सुव्रत और सौम्य अपने मम्मी से कहते है, हमें इस लडके से मित्रता नहीं रखना है । क्यो ? उसने इतने दिन तक वगैर पूजा एवम् भगवान बगैर कैसे रहा ? जिसका भगवान के प्रति सच्चा प्रेम न हो उससे मित्रता रखना किस काम की बात ? (सत्संग में सबके लिए यह अधिक प्रेरणादायक बल है) ।

आज के दिन आप सभी महारा जके लिए प्रार्थना करियेगा कि लालजी महाराज सत्संग का इतिहास बनाये ऐसा भविष्य में इनके द्वारा कार्य हो । क्योंकि जेतलपुर की सभा में (जे.व.-५) महाराजश्रीने कहा था कि या तो ईश्वर सभी करे तो होता है और यह चाहे तो सभा के बश हो सकता है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

वर्तमान में वसंत पंचमी आई और चली भी गयी वसंत का स्वागत इस उत्सव को म्युजियम में किये जो अक्षरधाम का पता भी है। एक बार म्युजियम को देख लेने के बाद वर्ष के सभी दिनो को उत्सव रुप में मनाना आ ही जाता है। मंदिर या म्युजियम में हमे यदि खाली होना आ जाये तो अपने अन्दर नये तत्व की जगह बनेगी, तभी अपने अंदर वसंत का भाव आयेगा। म्युजियम का दर्शन करने पर उसका आनंद जीवन भर याद रहता है। लेकिन हम लोग नये आनंद के चक्कर में तथा बीते वर्ष के आनंद की तुलना में लग जाते है। अभी प्राप्त होने वाले आनंद की तुलना बीते कल के साथ करने से अपने जीवन को नीरस कर देते है। अपनी मुलाकात को वर्षोतक स्थायी (ताजा) रखने के लिये अंदर रखी हुए वस्तुओ के महत्व की याद करे तो सच्चा आनंद प्राप्त होगा जो स्थायी भी होगा। जैसे की यह छोटा सा टेबल नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय कालुपुर मंदिर में रखा गया और यज्ञ के सभी सामान उस पर से लेकर श्रीजी महाराजने यज्ञ में अर्पण किये थे। इस टेबल का पता म्युजियम के होल नं. १ भले ही हो उसे हम अपने अंदर की शांति का पता बना सकते है। तभी तो म्युजियम की यात्रा सार्थक हो सकती है।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जनवरी-१८

रु। ६५,००५/- समीर कानुगा
रु। ३२,५३५/- सुनिल एस. पटेल
रु। ३१,०००/- धर्मप्रसाद मणीलाल शुक्ल - अहमदाबाद - अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीशंकर भालजा साहेब की वार्षिक पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
रु। २५,०००/- चुनीलाल दुर्लभजीभाई सोनी - पलियडवाले - राणीप - ह. जयेन्द्रभाई तथा पारुलबेन सोनी
रु। ११,०००/- अमृतवर्षा महोत्सव के लिए गांधीनगर से.-२३ - प्रेरक: शा. हरिकेशवदास स्वामी
रु। ११,०००/- दर्जी जिगर तथा हेमांगी की रिंग सेरेमनी के लिए - सिडनी
रु। १०,०००/- साँ.यो. धर्मिष्ठाबेन गुरु साँ.यो. कानबाई - बलदिया - कच्छ
रु। ७,०००/- पटेल सुभदाबेन मगनभाई - डांगरवा
रु। ७,०००/- पटेल नर्मदाबेन मंगलभाई - डांगरवा
रु। ७,०००/- पटेल मधुबेन गोविंदभाई - डांगरवा
रु। ५,००१/- मंगलाबेन सवजीभाई गज्जर - न्यु राणीप
रु। ५,०००/- मीनाबेन के. जोशी - बोपल
रु। ५,०००/- अ.नि. लीलाबेन अरविंदभाई पटेल के स्मरण में उवारसद - ह. हिमांशु तथा अमित पटेल
रु। ५,०००/- लालजी शामजी पटेल - केरा-भुज हाल लंडन

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जनवरि-१८

दि. ०२-०१-२०१८ घनश्यामभाई नरोत्तमदास पटेल - देउसणावाले हाल यु.एस.ए.
दि. ०४-०१-२०१८ प्रहलादभाई विठ्ठलभाई पटेल - यु.एस.ए.
दि. ०९-०१-२०१८ पू. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से अंजलेशभाई यशवंतभाई पटेल - गांधीनगर अमृत वर्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में
दि. १३-०१-२०१८ सोनल उर्विशभाई नरेशभाई भावसार - ह. अरविंदाबेन नरेशभाई भावसार - चांदलोडिया
दि. १५-०१-२०१८ भीमजीभाई राबडिया - सिडनी
दि. २६-०१-२०१८ गं.स्व. शारदाबेन रमणलाल भावसार के ७५ वें वर्ष के उपलक्ष्य में - ह. पंकजभाई तथा रजनीभाई तथा दीपकभाई - चांदलोडीया
दि. २८-०१-२०१८ पू. ध्यानप्रियदासजी स्वामी तथा भक्ति स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर, बावला सत्संग समाज

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग आलेखावलिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

तपस्या का प्रभाव

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा से मुक्तानंद स्वामी और उनके साथ पचास संत भाल प्रदेश में सत्संग करने के लिए भ्रमण कर रहे थे । उस समय भाल प्रदेश की गणना ऐसे की जाती थी कि जिसे दण्ड देना हो उसे भाल प्रदेश में भेजा जाता ता । कारण यह था कि वहाँ पर सुविधा का अभाव था । शाकभाजी का न मिलना तथा जलाभाव अधिक था ।

मुक्तानंद स्वामी और पचास संत भाल प्रदेश में सत्संग करके गढ़पुर के लिए प्रस्थान किये इस प्रवास के बीच कोई ऐसा गाँव नहीं मिला जहाँ पर भिक्षा की सुविधा मिल सके पूरे दिन उपवास में बीता यह अष्टमी की तिथी थी । नवमी तिथी को भी ऐसा ही हुआ । दशमी के दिन ये संत एक गाँव में उपस्थित हुए । एक सत्संगी बहन के पास मुक्तानंद स्वामी और संत लोग वहाँ गये । बहन अति खुश हुई तथा खिचडी बनाने के लिए तैयार हो गई । स्वामीजी ने कहा ''किसी भी प्रकार का कष्ट न लीजिए, खिचडी में घी और नमक दोनो को मत मिलाना ।''

समाज में व्यक्ति कार्य न करता हो फिर भी अच्छी गाडियाँ चलाता हो हम उसे क्या कहते है ? कि इनके पूर्वज कमा कर गये है ये लोग भोग कर रहे है । हम लोग ऐसी कौन सी तपस्या किए है कि हम अच्छे परिस्थिति में जीवन व्यतीत कर रहे है । इसका मुख्य कारण हमारे पूर्वज एवम् संतो की तपस्या का परिणाम है । इन संतो का उस समय का कठिन नियम था । छः रस का प्रयोग वर्जित, इस में नमकीन, खट्टा, तीखा इत्यादि इन छ में से वर्तमान वाले घी, तेल, मरचा, नमक भी था । सुपाच्य उबले अनाज को ही स्वीकार करते थे । स्वामिनारायण भगवान ने इस कठिन अवस्था में संतो को रहना सिखाये थे । इन्ही संतो की तपस्या से हम सभी सुखी है ।

मुक्तानंद स्वामीजी ने बहन से कहा खिचडी बनाईए लेकिन कढाई में घी और नमक मत डालियेगा । इस बहन को ऐसा विचार आया कि ये मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि पचास संत लोगो का आगमन मेरे घर पर हुआ है । ये लोग हमारे अतिथि है । इन लोगो को साधारण खिचडी कैसे खिलाये । संतो ने भले ही ना कहा हो क्या ऐसे उबली खिचडी कैसे रखे । इस बहनने कढाई में घी डालही दिया । सोची ऐसा करने पर संत भोजन कर लेगे, और उनको आभास भी नही होगा । उसने बड़े अच्छे भावना और प्रेम से घी डाला था ।

थाली तैयार हुई, संत लोगो की पंगत बैठी, वहाँ पर शुद्ध घी शांत रहे । जिस समय कढाई आई उसमें से सुगंधही सुगंधआने लगी । शुद्ध घी की सुगंधपहले आती है, और स्वाद बाद में पता चलता है । शुद्ध घी के साथ अन्दर भाव भी मिला था । कढाई से खिचडी लोगो को परोसने लगी । शुद्ध घी की सुगंधऐसा संत लोग कहने लगे । लगता है इसमें घी डाला गया है और आत्मानंदजी खडे हो गये । ये पचास संतो की मध्य के संत थे । और खडे होकर कहने लगे भाई मुझे इसे नही खाना है । मुक्तानंद स्वामी कहने लगे – ''अरे संतो ! हमने इस बहन को मना किया था फिर भी इन्होने भाव से घी डाल दिया है । दो दिन से उपवास है । आज दशमी है । आने वाला दिन एकादशी है । गढडा दूर भी है, हम लोगो को चल कर जाना है । महाराज का आदेश न होने के पश्चात भी यह खीचडी घी युक्त है । फिर भी मैं सभी संतो से आग्रह करता हूँ कि आप भोजन करिए । श्रीजी महाराज जो दण्ड देगे उसे हम सहन करेगे तथा उसका भोग भी स्वीकार करेगे । सभी संत बैठ गये । स्वामीजी की आज्ञा है तो भौजन कर लो । आत्मानंदजीने स्थान ग्रहण नहीं किया । जो होना हो । हो-होकर क्या होगा ? भाल प्रदेश में मर ही तो जायेगे । खिचडी नहीं खाये ।

द्वादशी को लोग गढडा पहुचे । सभी संत स्नान इत्यादि करके सभा में आने लगे । मुक्तानंद स्वामी अभी भी सभा में नहीं आये थे । और आत्माननंदजी तो सर्वोच्च को सीधे शिकायत कर चुके थे । किसके विरोधमें पता है ? मुक्तानंद स्वामी के विरुद्ध । श्रीजी महाराज को कहते है, हे प्रभु ! आप मुक्तानंद को अधिक सम्मान करते है लेकिन वह

પ.પૂ.અ.સૌ. લક્ષ્મીસ્વરૂપ ગાદીવાળાશ્રીના સાંનિધ્યમાં બહેનો માટે

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર, હવેલીમાં

પવિત્ર ધનુર્માસમાં

પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ

પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ

પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ
SHOT ON MI A1
MI DUAL CAMERA
પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ

પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ

પંચાન્હ જ્ઞાનયજ્ઞ

आपके सानिध्य के बाद भी आज्ञा का उल्लंधन कर रहे है। स्वामिनारायण भगवान कहते है, 'क्या हुआ ? ये सभी बात आत्मानजीने कहा है। तथा घी वाली खिचडी खिलवायें। स्वामिनारायण भगवानने कहा, मुक्तानंद स्वामी को सभा में आने दो। लोगो को उत्सुकता होने लगी कि महाराज आज मुक्तानंद स्वामी को क्या सजा देगे। महाराज से बड़े सम्मानित, स्थायी रुप से महाराज, जिसका सम्मान आदर बना रहे।

मुक्तानंद स्वामी सभा में आये। महाराज सीधे ही बात किये। मुक्तानंद स्वामी ! क्या बात है ? स्वामीजी को ज्ञात हो गया। महाराज, आत्मानंद की बात सत्य है हमने ही सभी संतो से कहा कि आप लोग खिचडी खा लीजिए। और लोग खाये। लेकिन महाराज मुझे दया आ गई कि भाल का सूखा क्षेत्र दो दिन का उपवास यदि खिचडी खाने को इनकार करु तो बाद में एकादशी का व्रत फिर भी हमने बहन को सीधे मना किया था। फिर भी उन्होने भाव एवम् श्रद्धा से घी डाला था। इस प्रकार की घटना हुई।

और श्रीजी महाराज अपने स्थान पर खड़े हो गये। सभी आश्चर्यचकित हो गये। आज तो महाराज जी स्वामी का अपमान करेगे। महाराज खडे होकर गले में से माला निकाले और मुक्तानंद स्वामी को पहनाकर आलिंगन किये। स्वामी आप थे तो ये पचास संत जीवित आये यदि आत्मानंद होते पचास की मृत्यु होने के बाद ही आते।

प्रिय मित्रो ! इस स्वभाव के हमारे संत थे। ऐसी उनकी तपस्या तथा ऐसे दयालु स्वभाव वाले मुक्तानंद स्वामी थे। भगवान के साथ एकत्व का भाव था। क्या करने से हमारे इष्टदेव खुश रहे इस तरह की ईच्छा मुक्तानंद स्वामी भ्राप लेते थे। ऐसे संतो के तपस्या एवम् पुण्य के प्रताप से आज के इस सत्संग में सभी के साथ जय... जयकार हो।

●

घोरवेबाज किसी का रिश्तेदार नहीं

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

कई वर्षो पहले की बात है। लेकिन स्मरण रखने वाली तथा बहुत कुछ सिखाने वाली यह बात है। एक गाँव में एक किसान रहता था। वह बहुत ही सज्जन और परोपकारी मनुष्य था। उसी किसी कार्य के लिए पन्द्रह दिन के लिए बाहर जाना पडा। इसके लिए उसे एक जंगल के मध्य से जाना पडता था।

एक दिन की बात है। वह किसान स्नान-ध्यान से निवृत होकर जंगल के रास्ते से जा रहा था। रास्ते में चलते-चलते कुआँ के अन्दर से बचाइये -बचाईये आवाज सुनाई दे रही थी। किसान कुए के पास गया। देखने पर ज्ञात हुआ कि कुए में सर्प, बंदर, वाघ और मनुष्य मिलकर चार जीव कुए में गिरे थे। एक दिन पहले अंधेरे में ये घटना-घटित हुई थी। परिस्थिति इतनी विकट थी की इन चारो में से कोई किसी की रक्षा नहीं कर सकता था।

किसान परोपकारी होने के साथ हिम्मतवाला भी था। उसने तुरंत व्यवस्था करके क्रमशः सर्प, बंदर और वाघ तीनो को बाहर निकाल दिया। इसके बाद मनुष् यको निकालने का प्रयास प्रारम्भ किया। उसी समय ये तीनो कहने लगे। हे किसान ! आप को हमारा खूब अधिक धन्यवाद। हम तीन लोग, जो आप ने हमारे उपर उपकार किये है उसके बदले में हम आप का कल्याण करेगे। लेकिन आप से निवदेन है कि कुए में गिरे मनुष्य को बाहर मत निकालिए। यह मनुष्य उपकार करने योग्य नहीं है। इन तीनो की बात न मानकर भी दयाभाव से प्रेरित किसान उस मनुष्य को भी बाहर निकालता है। बात करने पर याद आया कि ये मनुष्य इसी गाँव का है जहाँ पर किसान कई बार अपने कार्य हेतु जाता था। कार्य हो जाने के बाद लोग अपने अपने गन्तव्य स्थल पर चले गये।

इस घटना के पन्द्रह दिन हुए होगे कि वही किसान फिर से अपने कार्य के लिए उसी रास्ते से जंगल के मध्य से गुजरा जिस बाघ की रक्षा किया था वह सामने ही मिल गया। उसने किसी के द्वारा किए गये उपकार के बदले में कुछ गहने प्रदान किए। बाघ कर्तव्य का पालन करते हुए आगे चला गया। किसान जंगल पार करके गाँव में गया, कार्य पूर्ण करके वापस आ रहा था तभी ज्ञात हुआ की वह आदमी भी इसी गाँव में रहता है उससे भी मिलने चले। उस व्यक्ति ने स्वागत किया। दोनो बैठकर बात चीत करने लगे। बात-बात में किसान को रास्ते में बाघ मिला उसने गहने दिए इस बात को भी उससे कहा। गहना देखते ही वह आदमी सोचा यह तो गहना राजकुमार का है।

घटना ऐसी थी कि इस गांव के राजकुमार जंगल में गये थे फिर वे वापस नहीं आये। राजा को सूचना देने वाले के

पेईज नं. २२

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "कथा किसके लिए होती है ? कथा के माध्यम से जीवन जीने की दिशा मिलती है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

कथा के माध्यम से मनुष्य को कुछ नया सिखने कोमिलता है। कथा में से मनुष्य कुछ प्राप्त करता है। मनुष्य के जीवन में बदलाव आता है इससे मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन लासकता है। उसके लिये कथा होती है। वर्तमान काल में समाज में देखे तो मनुष्य का जीवन तीन प्रकार का दिखाई देता है। पाशुविक, मानवीय और दैवीय जीवन। पाशुविक जीवन में मनुष्य न करने योग्य कार्य भी करता है। जानते हुई दुराचार करता है। अखाद्रय भी खाता है। न देखने योग्य को देखता है ये सभी पाशुविक जीवन में आता है। और मनुष्य का जो स्वभाविक गुण होता है उस तर्ज पर जीने वाला व्यक्ति मानवीय जीवन कहलाता है। मानवीय जीवन का सर्वश्रेष्ठ लक्षण स्वयं से दूसरा दुखी न हो। दैवी जीवन जीने वाले बहतु कम होते है। ''दैवी जीवन अर्थात मनुष्य स्वार्थ से परे ऐसा कार्य करता है जो समाज में एक आदर्श बन जाता है।'' लेकिन देव जैसा कार्य करने से आदमी देव या परमात्मा नहीं बन सकता है। लेकिनजो लोग दैवी जीवन जीते है उसको सबसे बडा लाभ यह है कि भक्त एक कदम आगे चलता है। तो ईश्वर पाँच कदम आगे आ जाते है। मनुष्य दैवीय जीवन शुरु करते ही जिस स्थान पर है वहाँ से प्रगति के पथ पर आगे बढता है। यह किस प्रकार ? इससे भी तीन चरण है।'आत्मज्ञान','आत्म अनुष्ठान', और'आत्म उत्थान' आत्मज्ञान अर्थात आपके अंदर जो स्वभाविक गुण है उसे पहचानना है। सर्व प्रथम अपने को जानना कि मेरे अंदर ऐसा क्या है ? जो अच्छा नहीं है मेरे में क्या अच्छे गुण है। जब तक आप अपने को न पहचाने शास्त्र का ज्ञान बेकार है। दूसरा 'आत्म अनुष्ठान' अपने स्वभावगत गुणो को जान लेने के बाद 'आत्म मंथन' करना होता है। अर्थात् अच्छे गुणो को विचारने का प्रयत्न करना चाहिए। अच्छे गुण को रखना तथा खराब गुणो से मुक्त होना है। और तीसरा 'आत्म उत्थान' का अर्थ अपने आध्यात्मिक गति को उपर ले जाना। सभी के साथ अच्छा व्यवहार ही नही बल्कि अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को आगे करना है। आत्म उत्थान के लिए हमारे विचार सात्विक होने चाहिए जो भी कार्य करे खूब विचार कर करे। महाराजने शिक्षापत्री मे कहा है कि ''धर्म संबंधी कार्य तत्काल करना चाहिए।'' और व्यवहारिक कार्य विचार कर करना चाहिए। इसमे हम लोग विपरीत कर देते है। व्यवहारिक कार्य को प्राथमिकताये देते है। यह पर अपनी भूल होती है यह भूल कैसे होती है। मनुष्य संसार में आता है कुछ ईच्छा ये भी होती है। सभी मनुष्यो के पास स्वतंत्रता ईच्छा और विचार होते है। उसी हिसाब से आदमी जीता है। लेकिन अपनी जैसी ईच्छा वैसी ही मन भी होता है। लेकिन इसके लिये अपने पास विकल्प है ईच्छानुसार ध्येय प्राप्ति या उसे छोड दे यह स्वयं निश्चित करना होता है। अपने अहंकार के अधीन न रहकर लालची वृत्ति से दूर होकर जीवन में आने वाली विषम अवस्था में सामना करके अपने आत्मशक्ति का दुरुपयोग करके कार्य करे तो ईश्वर प्राप्ति नजदीक समझे। वास्तव में कोई मनुष्य १००% स्वतंत्र नहीं है, कुछ कार्य अनिवार्य है . लेकिन हम क्या करते है मेरी ईच्छा है आप को क्या तकलीफ है। दूसरे का जीवन देखे बिना मैं अपनी मर्जी से काम करुँगा। यह दूसरे को हानि नही, स्वयं को हानि करता है। भगवान ने जो नियम बनाये हैं उसी हिसाब से सम्पूर्ण संसार चलता है। भगवान के बनाये नियम में न रहने के कारण अपनाजीवन तकलीफ वाला हो जाता है। और कभी ऐसा भी होता है कि हम नियम में रहते है तो भी ऐसा दुःख क्यो ? नियम में रहने के बाद भी अपने जीवन में कष्ट आता है। यह अपने को मजबूत भी बनाता है। इसे आध्यात्मिक परीक्षा कहते है। ये कभी भी हो सकती है। स्कूल में बताया जाता है लेकिन जीवन में नही बताया जाता है। जैसे एक पाठ से अलग-अलग विधिसे प्रश्न पूछा जाता है यदि सीधा प्रश्न हो तो सरल होता है। बदल कर पूछने पर तकलीफ होती है। यदि अच्छे से पढ़कर गये है तो धैर्य के साथ धबराये विना

शांति से लिखने पर वो पास हो जाते है। उसी तरह संसार में भी जीवन में अचानक भगवान परीक्षा लेते है . अपने सभी कार्य आयोजन पूर्वक किये हो सभी तरह से विचार भी किये हो तब भी कभी कभी विपरीत अवस्था आ जाती है। उसमें पास करना पडता है। जैसे पहली कक्षा से दूसरी कक्षा अंत में कालेज में जैसे जैसे आगे पढते है वैसे कठिनाई बढती जाती है। जैसे हमारी पढाई वैसे ही हमारा स्वाभाविक स्तर बनता है। उसी प्रकार ही महाराजश्री परीक्षा लेते है आपके जीवन में जो परीक्षा होती है। वो इसी लिए होती है। हम जैसे-जैसे ज्ञान की गहराई में जाते है उतनी परीक्षा कठिन होती है। लेकिन सभी अवस्था को सकारात्मक रुप से लेना चाहिए। आध्यात्मिक परीक्षा में कुछ तो पहले डर की परीक्षा लेते है। आप किस परिस्थिति में आप घबरा जाते है यह देखने के लिए तथा हिम्मतवर्धन के लिए होती है। कुछ व्यक्ति के पास अथाह शक्ति (सत्ता) होती है तो यह देखने के लिये कि आप प्रमादी तो नही हुए है . ईश्वर यह देखता है कि हमने जो सत्ता दी है उसका उपयोग कैसे करते है ? महाराज आप को चाहे कितना बड़े बनाये तो आप को सावधान हो जाना चाहिए कि मेरी परीक्षा होने वाली है। क्षमा और क्रोधकी परीक्षा होती है। क्रोधित होकर अपशब्द बोलने जैसा आचरण करते है कि नही, क्षमा शील है कि नही यह भगवान देखते है। यह देखने के लिये महाराज कभी सब ले लेते है तो कभी सब कुछ दे देते है। जब महाराज सब कुछ दे देते है तब भी विवेकी होना चाहिए। अहंकार युक्त अविवेकी नही होना चाहिए। जब कभी कुछ पास न रहे तब संतोष औऱ धीरज रखना चाहिए हतास और निराश नही होना चाहिए। सकारात्मक सोच के साथ महाराज ने हमको एक सीढी उपर करना चाहते है। क्योंकि विषम परिस्थिति में क्या होता है। तो मनुष्य सभी प्रयत्न करता है और अपने ज्ञान का उपयोग करता है। परिस्थिति से लडने के लिए धीरज और शक्ति बऽ जाती है। आत्मबल में वृद्धि हो जाती है। जीवन में कभी ऐसा बने तो सबल होकर श्रद्धा रखनी चाहिए। धबराना नही चाहिए। इससे आध्यात्मिक जीवन में उच्च स्थान मिलता है। परिस्थिति को धीरे धीरे स्वीकार कर लेना चाहिए और आप लोग सत्संग में इतना आगे आये हैं। नही तो यहाँ पर नही बैठ सकते थे। कभी कभी जीवन में स्वयं को भी प्रोत्साहन देना पड़ता है। हे ईश्वर जीवन में अच्छा कार्य कर सकूं ऐसी भावना बनाने में थोडा प्रयास करना गलत नही है। हम सब श्री नरनारायणदेव की क्षत्रछाया में बैठे है। आप सभी की शरणागति दृढ हो ऐसा होना आवश्यक है। किसी की ताकत नही जो आपका अहित करे क्योकि नरनारायणदेव आठ आठ शस्त्रो को लेकर बिराजमान है। आप प्रतिदिन साँस लेते है इसमें कोई विकल्प खोजते है कि मुझे साँस नही लेना आवश्यक है। स्वयं संचालित होती है। इस में विकल्प नही है। इसी प्रकार श्री नरनारायणदेव पूरे भरत खंड के राजा है। तो हम जिसके राज्य में रहते है तो उनकी आज्ञा में रहना चाहिए। तो स्थायी श्री नरनारायणदेव का होकर रहना बाद की दूसरी कथा खरमास में अपने म्युजियम में करना है। जिसकी तारीख अब निश्चित होगी।

•

सेवा की महिमा

- लाभुबहन मनुभाई पटेल (कुंडाल ता. कडी)

मालिया गाँव में मकन भट्ट थे। सुदामा की तरह गरीब स्थिति में थे। इसके पास भौतिक सम्पदा नही थी। लेकिन दिव्य (आध्यात्मिक) सम्पत्ति थी। श्रीमंत थे। धर्मज्ञान, वैराग्य, दया, संतोष इत्यादि गुणो से सम्पन्न थे। गाँव में संतो के आगमन पर निश्चित कथा के समय आ जाते थे। शांति से कथा सुनते तथा संतो की क्या सेवा करे ? क्यों कि मेरे पास पैसा तो नही है। लेकिन दूधहै। हमेशा ठंडी मीठी छाश (मठ्ठा) और अचार संतो को दे देते थे। कई वर्षो तक छाश और अचार से सेवा किए।

श्रीजी महाराज अत्यधिक खुश हुए। रात्रि में दिव्य रुप में आये। मकन भट्ट जय स्वामिनारायण क्या कर रहे है ? महाप्रभु जय स्वामिनारायण, आज गरीब के घर पधारे है। धन्य समय, धन्य अवसर....टूटे फूटे चार पाई पर गद्दे को विछादिये। श्रीजी महाराज उसके ऊपर बैठ गये। प्रभु के चरण छूकर दो हाथ जोडकर कीर्तन करने लगे।

''पूर्वनुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे,
स्वामिनारायण मळीया त्यारे,
नेत्रे मोहनवर निरख्या ज्यारे
पूरण काम थयुं मारुं त्यारे.''

श्रीजी महाराजने कहा, हमारे संतो को आप छाश और अचार देते है। उसके बदले में मैं आपको क्या दूँ। क्या इच्छा है भक्तराज कहिए तो धन सम्पत्ति दूं। बोलो क्या चाहिए ?.... महाराज संसार की नाशवान सम्पति की इच्छा नही है। परिश्रम और मजदूरी करके गुजारा चलाता हूँ। तथा आनंद से आप का स्मरण करता हूँ। हे प्रभु यदि आप खुश है तो आप अपने अक्षरधाम में ले जाये। ठीक तैयार रहियेगा।

एकादशी के दिन आपको हम लेने आयेगे । उसने पत्नी से भी बात किया मैं बादमें जाऊगा । तब उनकी पत्नीने कहा प्रतिदिन छाश मैं बनाती थी । इस कारण प्रभु से कहिए मुझे भी धाममें ले जाये । श्रीजी महाराज एकादशी के दिन मकन भट्ट को धाम में ले गये । और दूसरे दिन उनकी धर्मपत्नी को धाममें ले आये । यह है सेवा का प्रताप । वन में योगी तपस्या करके थक जाता है तो भी प्रभु का साक्षात् दर्शन नही होता है । लेकिन आज तो प्रभुने मोक्ष के द्वारपर खुद छोड दिये है ।

''कांजे पाम्या अमारो प्रसं गरे
तेने तुल् यआवे केम गंग रे
एने स्पर्श्याता वामन पावे रे
ते तो हरि अवतार का 'वे रे
पण अवतारना जे अवतारी रे
बात तेनी जो जाणजो न्यारी रे.''

निष्कुलानंद स्वामी जी कहते है कि, वामन महाराज के चरणो के स्पर्श से गंगाजी प्रगट हुई । ये तो अवतार के अवतारी सहजानंद स्वामीजी है .... .उनकी गति न्यारी है उन्हें पहचान लीजिए । लेकिन हम लोग ऐसे है मूल्यवान वस्तु को फेंक देते है तथा बेकार नजदीकी वस्तु को जकड कर रखते है । मोहमाया, मेरा-तेरा, आलस्य अज्ञान, असमानता आदि वस्तुओ को पकडकर रखते है ।

आज की वात सुनकर जीवो की नैया पार हो करोडो करोड चराचर स्थिर या सचल सम्पति सबको सहजता से प्राप्त हो -

'एम वेति करे छे मे वाट रे,
ब्रह्ममोलमां जीवाने मार रे ।
श्री मुखे कहे एम श्रीहरि रे,
सहुवात मानजो ए खरी रे ॥

अक्षरधाम की नैया प्रवाहित है । लेकिन ध्यान देना पडेगा कि आप कैसे बनकर धाम में जायेगे । हृदय में हरिका हित तथा मुख से हरिभजन आँखो में हरि की मूर्ति, कान से श्रवण, हाथ में जपमाला, सभी को प्रणाम और हृदय में वैराग्य.... त्यागी होने पर ही धाम में उचित स्थान मिलेगा ।

अनु. पेईज नं. १९ से आगे

लिए एक पुरस्कार देने की घोषणा की थी । गहने को देखते ही उस मनुष्य के अर्त्तमन में स्वार्थी विचार पैदा हुआ कि इस किसान को राजा के पास पकडा दू तो मुझे पुरस्कार प्राप्त होगा । उसने तुरंत सैनिको को सूचना भेजवा दिया । तथा किसान को जेल में डलवाकर अधिक पुरस्कार प्राप्त किया । किसान निर्दोष होते हुए भी उसे अकस्मात इस प्रकार का कष्ट प्राप्त हुआ ।

इस बात की सूचना सर्प और बंदर को मिली । बंदर और सर्प जेल में आये तथा बंदरने किसान को फल लाकर दिया । तथा साँप ने जहर उतारने का चमत्कारिक मंत्र किसान को दिया । तत्पश्चात सर्प ने राजा को डसा इस कारण से राजा तडफडाने लगे । जहर का प्रभाव पैलने लगा । चारो तरफ वायु वेग से समाचार फैला तथा लोगो की दौड-धाम शुरु हो गयी । वैद्य और हकीम प्रयास करने लगे लेकिन किसी दवा ने लाभ नही किया । किसान मंत्री के पास सूचना भिजवाया की मेरे पास चमत्कारी मंत्र है । यदि मुझे जेल से मुक्त करो तो जहर का प्रभाव मैं समाप्त कर सकता हूँ । मंत्री तत्काल किसान को जेल से मुक्त कर दिया । किसान राजा के पास आकर मंत्रोच्चार करके सर्प का जहर उतार दिया । राजा स्वस्थ हो गये । स्वयं के जीवन रक्षा करने के कारण राजा ने किसान को धन्यवाद प्रदान किया । कई भेट और सौगात भी दिया । किसान से सूचना प्राप्त हुई कि वह व्यक्ति झूठी सूचना देकर राजा से उस व्यक्ति को आजीवन कारावस में डलवाया था ।

किसान प्रसन्नतापूर्वक अपने गाँव की तरफ जा रहा था । वहाँ पर वे तीन बाघ, बंदर और सर्प किसान से मिलकर कहने लगे, हे किसान ! आप ने हम सब प्राणीयों की रक्षा की तब भी हम लोग आप की सहायता के लिए तत्पर है । लेकिन वह व्यक्ति धोषा देकर अपने स्वार्थ के लिए कारावास में भिजवा दिया । मनुष्य से अच्छे हम प्राणी ही है । किसान बोला ''मनुष्य किये गये उपकार के फल स्वरुप अपकार की भावना से कार्य करे तो पशु से भी निम्न है लेकिन यदि परोपकारी होता है तो देवता से भी उच्च पद को प्राप्त होता है ।

अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान के प्रथम १० वे वचनामृत में सेवकराम का उदाहरण देकर इस प्रकार के उपकार का कृतज्ञ न हो इस तरह के व्यक्ति का त्याग करना चाहिए । ऐसा आदेश दिये है । यदि जीव न में हम निश्चित रुप से इन बातो पर ध्यान देकर परोपकार, सत्संग और सेवा करेगे तो भगवान की कृपा हमारे उपर सतत बनी रहेगी ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पवित्र खर मास धनुर्मास (मलमास) में प.पू.अ.सौ. गद्दीवालाश्री के शुभ सानिध्यमें (बहनो के लिए) पंचान्ह ज्ञानयज्ञ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गद्दीवालेश्री के सानिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर (हवेली) में पवित्र खरमास में ता. २२-१२-१७ से ता. २७-१२-१७ पर्यन्त भव्य महिला पंचान्ह ज्ञान यज्ञ का सुंदर आयोजन सम्पन्न हुआ।

उसमें वक्ता पद पर (कालुपुर मंदिर हवेली) सांख्ययोगी बहनो को अप्राय लाभ दिये। जिस में पहले दिन सां. रेखाबा आदर्श भक्ति कथा विषय के अनुरुप आदर्श भक्तो के दिव्य चरित्र की कथा का श्रवण कराया। इस प्रसंगमें प.पू.अ.सौ. गद्दीवालेश्री के शुभ हाथो से दिव्य शाकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। दूसरे दिन सां. मीनाबाने आदर्श स्त्री भक्त कथा पर अनेक चरित्र में वहेलाल में श्रीजी महाराज अड्डारह घर पर एक साथ लड्डू खाये थे। उसका बड़ा दिव्य उत्सव हुआ था। तीसरे दिन सां. भारतीबाने नंद संतो के सुंदर जीवन कवन की महिमा समझायी थी। उसी तरह कालवाणी में स.गु. मुक्तानंद स्वामीजीने पहले बार आरती बनाकर स्वंय उतारे थे। उन्होने वहाँ पर समूह आरती का अलौकिक दर्शन कराया था। चौथे दिन सां. गीताबाने नरनारायणदेव के अद्भूत महिमा का गान किया। श्री नरनारायण जयंती में फूल-हार का उत्सव भी भव्य रुप से किया गया था। अन्त में श्रीहरि के धर्मकुल की महिमा का सविस्तार गुणगान किये थे। पांचवे दिन पूर्णाहुति के समय सां. भारतीबाने स्वयंकी भव्य शैली में श्री घनश्याम जन्म उत्सव मनाकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की महिमा को समझाया था। पांचवे दिन सुंदर ज्ञान यज्ञ में सभी बहनो ने प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के अलौकिक दर्शन साक्षात आशीर्वाद के देव का दुर्लभ लाभ मिला था। लगातार पांचवे दिन प.पू.अ.सौ. गद्दीवालाश्री का अलौकिक सानिध्य सबको प्राप्त हुआ था। पांचो दिन पू. रुपलराजा और पू. सोनलराजा भी विशेष रुप से उपस्थित रहे थे। प्रारम्भ में पूर्णाहुति तक हवेली की तीनो मंजिल बहनो हरिभक्तो से भर गई थी। (कालुपुर मंदिर हवेली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल की कृपा से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) में ता. ७-१-१८ को रविवार के दिन पू. महंत स्वामी समस्त सत्संगी समाज एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल गांधीनगर द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया है।

पू. संतो द्वारा भव्य शाक की अलौकिक व्यवस्था विधिवत रुप से सम्पन्न हुई। प्रासंगिक सभा में स.गु.पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. महंतश्री पी.पी. स्वामी, पू. शा. राम स्वामी, शा. महंतश्री दिव्यप्रकाश स्वामी आदि संतो ने भगवान श्रीहरि की महिमा का गुणगान किये। सभा का संचालन पू. स.गु.शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) सुंदर रुप से शोभित किये। कई भक्त शाकोत्सव में यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिए। तथा हजारो हरिभक्तो ने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण कर धन्यता अनुभव किये।

(शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपादसजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राज.) शाकोत्सव

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल की कृपा से वाली (राज.) मंदिर के पूज्य महंत स्वामी देवप्रसाददासजी की प्रेरणा से ता. २-१-१८ को घूस सुद-१५ के दिन श्री स्वामिनारायण वाली मंदिर में भव्य शाकोत्सव हुआ। शाकोत्सव के मुख्य यजमान चमना रामउकाजी भूरिया के परिवार के लोग थे। अन्य हरि भक्त भी तन, मन और धन से सेवा में लगे थे।

इस प्रसंग में बीलिया, हिम्मतनगर इत्यादि धामो से आकर कथा का सुंदर लाभ लिये। पूरा आयोजन कोठारी स्वामी हरिप्रसाददासजी और शास्त्री स्वामी ब्रह्मस्वरुपदासजीने किया था। वाली, दांतीया, चोबाउ,

जेलातरा, गोलिया, बाटेरा, नवापुरा, वडया, मेडा, खारवा, सिध्धासवा आदि गाँवो के हरिभक्त देव दर्शन करके, कथा श्रवण करके शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव प्राप्त किये।

(शा. स्वा. ब्रह्मस्वरुपदासजी वाली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में ता. ३१-१२-१७ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। सभी हरिभक्त अनेक सेवा का लाभ लिए। इस प्रसंग में राली, बीलीया, सापावाडा और कालुपुर मंदिर से संतो का आगमन होने पर शाकोत्सव और सर्वोपरि श्रीहरि के महिमा का गुणगान किये।

सम्पूर्ण प्रसंग में श्री घनश्याम महिला मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणादायक रही। सम्पूर्ण आयोजन यहाँ के मंदिर महंत स्वामी और मामलतदार श्री जसुभाई एस पटेल ने किया था। पूरे खरमास के महीने भर श्रीहरि का स्मरण एवं भजन संत-हरिभक्तो द्वारा किया गया। ता. ७-१-१८ रविवार के दिन श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख सुंदर अन्नकूट किया गया।

(जय एस. पटेल - हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पेथापुर मंदिर के महंत स्वामी धर्मप्रवर्तदासजी के प्रेणा से ही श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया। बालवा गाँव महिला हरिभक्तोने बाजरे की रोटी बनाकर सुंदर सेवा प्रदान किये। पूजारी स्वामी और परोपकारी स्वामी एवम् सेवा भावी हरिभक्तोने सुंदर सेवा किया। इस प्रसंग में १५०० लोग हरिभक्त शाकोत्सव का लाभ उठाये।

इसके यजमान श्री चीनुभाई एस. भावसार, संजयभाई, सुधीरभाई, डॉ. परेशभाई, आर. के. पटेल, कंचनबेन मोदी इत्यादि लोगोने लाभ उठाया।

खरमास में पूरे महीने श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून किये। धून करने के बाद अलौकिक प्रसाद दिया गया। महंत स्वामीने श्रीमद् सत्संगीजीवन की कथा का सुंदर रसपान कराया। पूजारी घनश्याम स्वामी और परोपकारी स्वामीजीने ठाकोरजी का अति सुंदर श्रृंगार करके दर्शन कराया। (कोठारी मुकुंदभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा दिव्य शाकोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समग्रधर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. पू. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट) के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा (भाईयो-बहनो) ने श्री नरनारायण युवक मंडल तथा समस्त ग्रामवासियो के सुदंर आयोजन से ता. ३१-१२-१७ रविवार को श्री नीलकंठ महादेव बापुपुरा में भव्य शाकोत्सव किया गया।

परम पूज्य लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा अलौकिक शाक का निर्माण धाम-धूम से किया गया। इस प्रसंग में शाकोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. चौधरी जीतीबेन, कांतिभाई केशाभाई, साथ में मंजूलाबेन प्रकाशभाई चौधरी का परिवार था। गाँव के समस्त निवासी (हरिभक्त)ने भी छोटी-बड़ी सेवा का यजमान बनकर लाभ लिया। प्रासंगिक सभा में पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट) और माणसा के महंत शा. स्वामी नंदकिशोरदासजी आदि संतोने श्रीजी महाराज के गुणगान किये। अगल-बगल के ग्रामवासी भी (हरिभक्त) शाकोत्सव का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतपुरा (लाकरोडा) स्थापना पूजा एवम् शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा से ता. ९-१-१८ दिन मंगलवार के शुभ दिन को हिम्मतपुरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री के करकमलो से श्री नरनारायणदेव के देखरेख में सुदंर हरिमंदिर की वास्तु पूजन विधिविधीवत रुप से सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट के महंतश्री) आदि संतो में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान और उनके स्थान पर बिराजमान प.पू. आचार्य महाराजश्री का महत्व सरस भाषा में समझाये। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा शाकोत्सव का अलौकिक वृद्धि हुई। प.पू. महाराजश्रीने पूरे सभा को प्रेमभरा आशीर्वाद प्रेषित किये। गाँव के सभी

भक्तोने अनेक सेवा देकर शाकोत्सव का लाभ लिया।

(शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर प्रार्थना मंदिर प्रथम उद्घाटन एवम् श्रीमद् भागवत पंचान्ह कथा

परब्रह्म परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आदेशानुसार उसी प्रकार पू. स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर प्रार्थना मंदिर के प्रथम पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. १७-१-१८ से २१-१-१८ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण (रात्रि कालीन) पू. स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) वक्ता के स्थान पर संगीत के मधुर ताल से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर रात्रीकालीन कथा, भव्य पोथीयात्रा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, ठाकोरजी का अभिषेक, अन्नकूट दर्शन, धर्मकुल दर्शन, संतोका दर्शन और अंत में महाप्रसाद का आयोजन सुंदर रुप से सम्पन्न हुआ । इस अवसर के मुख्य यजमान अ.नि. प.भ. बाबुभाई मणीलाल पटेल, अ.नि. मंगुबेन मधुरदास पटेल, गं.स्व. अमथीबेन बाबुलाल पटेल इत्यादि हरिभक्तोने सेवा प्रदान की।

इस अवसर पर पू. महंत स.गु. स्वामी हरिकृष्णदासजी अनेक धामो से आये हुए संत लोग थे। सभा का संचालन पू. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट महंतश्री)

देवदाका गोलिया (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव

परमकृपालु श्रीहरि की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञानुसार तथा वाली मंदिरके कोठारी स्वामी स्वामिनारायण मंदिर देवका गोलिया स्थान पर १३-१-१८ तारीख को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

गाँव के भक्तोने शाकोत्सव में तन, मन, धन से सेवा दिये । इस अवसर पर कली बीलिया के शा. स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजीने सुंदर कथा वाचन किये। पूर्ण व्यवस्था वाली मंदिर के ब्रह्मस्वरुप स्वामीजीने किया। शाकोत्सव के मुख्य मेहमान सिंह परिवारने लाभ लिया। संतो की पूजा में चौधरी भीमाराम तथा बिरमाराम काग परिवारने भाग लिया था। (शा. स्वा. ब्रह्मस्वरुपदासजी - वाली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालियाणा में युवा सत्संग शिबिर - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आदेशानुसार उसी प्रकार समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और समस्त गाँव के आयोजन द्वारा ता. ६-१-१८ दिन शनिवार को कालीयाणा गाँव में प.भ. रामजीभाई गोहेल के जिन, जेतलपुर मंदिर में पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी इत्यादि संत मंडल की कर कमलो द्वारा ठाकोरजी के समक्ष शाकोत्सव मनाया गया। इस अवसरपर सत्संग भी हुआ था। जिस में पूज्य शास्त्री स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने नरनारायण गद्दी और मूल संप्रदाय और उसके नियमो को भूलकर अत्यत्रन जाय ऐसी सूचना दी गयी। दोपहर २-०० बजे से ५-०० बजे कीर्तन और भजन की गई। कालीयाणा तथा अन्य १८ गाँवो में से ७०० जितने हरिभक्तोने लाभ लिया। रामपरा से अरजनभाई मोरी, खोलडीयाद से रामजीभाई गोहेल आदि अनेक भक्त आये थे।(गणेशभाई डी. बूटिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा ३५ वाँ वार्षिकोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट) की प्रेरणा से श्रीहरिप्रसाद स्वरुप श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा का ३५ वाँ वार्षिक उद्घाटन ता. २४-१२-१७ महासुद-७ को ठाकोरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट इत्यादि हुआ था। महंतश्री शा. पी.पी. स्वामी बालस्वरुप स्वामी (नारणघाट) प्राणजीवन स्वामी, शा. गोपालजीवन स्वामी संतो द्वारा कथा तथा भजन की गयी। समग्र उत्सव में यजमान प.भ. अरविंदभाई जोइताराम पटेल (गवाडा वर्तमान में अमेरिका) ह. अल्पेशभाई, कमलेशभाई का परिवार उपस्थित रहा था। (कोठारीश्री गवाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वीजापुर (वजीबा) तृतीय उत्सव - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा और मार्गदर्शन से अ.मु.पू. बजीबा स्मृति मंदिर के तीसरे वर्ष के उत्सव को ता. २१-१-१८ दिन रविवार को धामधूम के साथ सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी कथा सुनाये थे। धार्मिक स्थलो से संत पधारे थे । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी

चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर)ने शोभित किया । संतो द्वारा भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । ठाकोरजी का वृहद अन्नकूट किया गया । आरती की गई । गाँव के सभी लोगोने (हरिभक्त) तन, मन और धन से सेवा करके धन्य हुए ।

(कोठारीश्री विजापुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल (कडी) शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महामुक्त कला भगत परिवार के सुंदर आयोजन से ता. ७-१-१८ को कुंडाल गाँव के कला भगत की वाडी में भव्य शाकोत्सव हुआ । गाँव के सभी हरिभक्तो ने शाकोत्सव का लाभ लिए । दोनो स्वामिनारायण मंदिर में स्वामिनारायण भगवान के महामंत्र की धुन गाई गई ।

(लाभुबेन मनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उमेदगढ (ईडर) का शाकोत्सव

परमकृपालु श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से उमेदगढ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पूरे खरमास हरिभक्तोने प्रातः महाधून का गायन किये । ता. १७-१-१८ को गाँव के सभी हरिभक्त मिलकर ठाकोरजीके समस्त सुंदर शाकोत्सव मनाया । विश्वेश्वर स्वामी आदि संतोने कथा सुनायें - गाँववासी शाकोत्सव को प्राप्त करके धन्य हुए ।

(कांतिभाई पटेल - उमेदगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती द्वारा कोटेश्वर गुरुकुल में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से समस्त सत्संग समाज साबरमती द्वारा ता. ३१-१२-१७ रविवार को कोटेश्वर श्री सहजानंद गुरुकुल में भव्य शाकोत्सव मनाया गाय । साबरमती के १२०० जितने हरिभक्तोने शाकोत्सव का दर्शन करके प्रसाद लिये । इस अवसर पर पू. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी और शा. गोपालजीवन स्वामीने कथा वार्ता द्वारा हरिभक्तो को खुश किए । सम्पूर्ण शाकोत्सव महिला मंडल, युवक मंडल और कोटेश्वर गुरुकुल के विद्यार्थीयोने प्रेरक सेवा कार्य किया ।

(कोठारीश्री, साबरमती मंदिर)

श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव-शाकोत्सव एवम् कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वामी विजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से जमीयतपुरा श्री प्रभा हनुमानजी महाराज के वार्षिक उत्सव धाम-धूम से मनाई गई । जिसके उपलक्ष में ता. ३१-१२-१७ से २-१-१८ तक श्री भक्त चिंतामणी कथा शा. स्वा. सत्यस्वरुपदासजी वक्ता पद पर हुई थी ।

इस उत्सव में पू.स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी (कालुपुर) पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) और स.गु. शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी (कलोल) आदि संतो ने सुंदर आर्शीवचन दिये । कई हरिभक्त यजमान बनकर सेवा किये । दादा का सोलह श्रृंगार अभिषेक और शाकोत्सव खुशी से करकमलो द्वारा किया गया । हजारो हरिभक्तने दादा का दर्शन और संतो की अमृतवाणी एवम् कथा श्रवण करके शाकोत्सव का आनंद उठाया । (विष्णु स्वामी कालुपुर मंदिर)

लवारपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर (गांधीनगर) में ता. २४-१२-१७ दिन रविवार को दिव्य शाकोत्सव मनाया गया । जिस में गाँव के तथा अगल-बगल के गाँव से १५०० जितने हरिभक्तोने लाभ प्राप्त किया ।

इस उत्सव में गांधीनगर मंदिर से स.गु.शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी आकर कथा का सुंदर लाभ दिये । पूरे शाकोत्सव में ग्रामवासी लोग और महिला मंडल की सेवा प्रसंशा योग्य रही । (कोठारीश्री - लवारपुर मंदिर)

मोटेरा से कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर तक श्री नरनाराणदेव दर्शन हेतु पदयात्रा

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारायणघाट) की प्रेरणा से मार्गदर्शन से श्रीहरि के चरणो से अंकित मोटेरा गांव से कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायण की ध्वजा चढाने के लिए भव्य पदयात्रा ता. ७-१-१८ दिन रविवार प्रातः ८ बजे प्रारम्भ हुई । इसके यजमान प.भ. शैलेषभाई बलदेवभाई पटेल का परिवार था । पदयात्रा में ४०० हरिभक्तोने भाग लिया । साथ में पू. शा. राम स्वामी और छोटे ब्रह्मचारी मुकुंदानंद स्वामीश्री साथ थे । यजमान की ओर से श्री नरनारायणदेव को ताल और संत पार्षद और पैदल चलने वाले भक्तो को भोजन कराया । श्री

नरनारायणदेव युवक मंडल भोजन की सुंदर व्यवस्था किये थे। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

गाडीया गाँव में (संतरामपुर) में सत्संग प्रवृत्ति

परमकृपालु श्रीहरि की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से झाडी प्रदेश के गाडीया गाँव के विद्यालय के २२५ छात्रो ने कालुपुर मंदिर के शा. स्वामी विश्वस्वरुपदासजी उनकी ईच्छानुसार सम्प्रदाय के वर्तमान नियमानुसार कंठी बांधकर लाभ दिये तथा सत्संग के नियमो को बताया । सभी बच्चोने संप्रदाय की परंपरा और श्री नरनारायणधेव के गद्दी के महत्व को समझा।

(प्रविणभाई पटेल - गाडीया स्कूल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल का शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेशानुसार तथा महंत शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल में ७-१-१८ तारीख को विशाल शाकोत्सव मनाया गया । गाँव के सभी हरिभक्तने सुंदर सेवा दिया । इस अवसर पर शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजीने नियम, निश्चय और पक्ष पर बात बताई पूर्ण प्रबन्धकोठारी किरीटभाईने किया था।

(जय एम. पटेल)

राणीपुरा (प्रांतीज क्षेत्र) में नवीन मंदिर का उद्घाटन मुहूर्त

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेशा से प्रांतिज क्षेत्र साबंरकांठा जिला के राणीपरा गाँव में नवीन श्री स्वामिनारायण मंदिर का विशेष उद्घाटन मुहूर्त प.पू.ध.धु. आचार्यश्री के करकमलो द्वारा १६-१२-१७ तारीख को विधिवत सम्पन्न हुआ । इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रांतिज मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी और शा. स्वामी गोपालजीवनदासजी की देखरेख में हुआ।

पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर-नारणघाट), पू. शा. रामस्वामी (कोटेश्वर), स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनग), महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशजी (नारणघाट) कोठारी शा. मुनि स्वामी (कालुपुर) इत्यादि संतो के सहयोग से मंदिर बनेगा।

नवलसिंह भगत प्रांतिज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा का द्वितीय पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से तथा मथुरा महंत स.गु. शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२) का दूसरा पाटोत्सव पूस वद-७ और तारीख ८-१-१८ के दिन स.गु.शा. स्वा. हरिजीवनदासजी तथा नीलकंठ स्वामी की उपस्थिति में यजमानश्री रसिकभाई चुनीलाल सोनी तथा सौरभ एस. सोनी की ओर से धामधूम से मनाया गया । संतो द्वारा ठाकोरजी का अन्नकूट और आरती की गयी । कथा, कहानी तथा महामंत्र का धुनगान हुआ । शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी फोन द्वारा पाटोत्सव अवसर का फोन से शुभेच्छा दिये । खरमास में पूरे महीने धुन की गई । स.गु. शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी शा. स्वा. हरिजीवनदासजी और नारायणभगतने कथा वार्ता का सुख दिये।

(के. वी. प्रतापजी-मोडासा)

घोडीयार (संतरामपुर)

सर्वोपरी श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से मकर संक्रांति पर घोडीयार गाँव के सुंदर सभा में श्रीहरिनाम धुन, कथा वार्ता, जनमंगल पाठ किया । ठाकोरजी को अन्नकूट रखकर आरती की सभी ने अवसर का लाभ लिया। (सुमनभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर संतरामपुर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी के प्रेरणा से अ.नि. कालुभाई प्रेमचंदभाई माली की सुपुत्री हिनाबेन के याद में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पंचान्ह पारायण स.गु. शा. विश्वस्वरुपदासजी के संगीत युक्त मधुरताल पर हुई । इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम वे आकर दर्शन तत्पश्चात सभा में बैठकर सबको आशीर्वाद प्रदान किये । इस अवसर पर अन्य धामो से संत आये थे । मधु भगतने सुंदर सेवा किया । डॉ. श्रीमाली का सभा में सन्मान किया गया। (कौशलकुमार माली)

संतरामपुर क्षेत्र में सत्संग प्रवृत्ति

सर्वावतारी श्रीजी महाराज की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से तथा विश्वस्वरुपदास की प्रेरणा से बाल युवा सत्संग प्रवृत्ति के हिस्से के रुप में यहाँ संतरामपुर गाँव के विद्यालय प्रांगण में एक दिन के सत्संग प्रशिक्षण कार्यक्रम में संतोने सत्संगियो की दिन-चर्या के बारे में लाईव प्रदर्शन दिखाया था । २०० युवा बालको को पूजा पेटी दी गयी थी । बालको ने भाग लिया । रनेला सत्संग

समाज की तरफ से भोजन प्रसाद खिलाया गया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल -राकेशभाई सुथार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर में ता. ३०-१२-१७ दिन शनिवार को भव्य शाकोत्सव के उपलक्ष्य में दोपहर २ बजे महामंत्र धुन इसके बाद सभा सम्पन्न हुई । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, कोठारी शा. मुनि स्वामी स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी संत मंडलने कथा कही । श्री नरनारायणदेव की दृढ आशा उपर ध्यान देने के लिए समझाया ।

पूरे शाकोत्सव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल की सेवा प्रेरणादायक रही । संतो का आशीर्वाद तथा उनके करकमलो द्वारा सुदंर शाकोत्सव पूर्ण डुआ ।

पूरे उत्सव का मार्गदर्शन सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था । (कोठारी नटुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभादेश से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गद्दीवाले के आशीर्वाद से तथा पाटडी मंदिर के सां. शांताबा, हंसाबा, और् रंजनबा की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी के पूरे हरिभक्तो के सहयोग से ता. २४-१२-१७ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस अवसर पर सुरेन्द्रनगर और मोरबी से आये संतो की अमृतवाणी का लाभ मिला । एक हजार हरिभक्तोने प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । (नारणसिंह बी. परमार - पाटडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु सर्वोपरी श्री बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल की कृपा से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ७-१-१८ रविवार को श्री सुरेशभाई के गोपी फार्म में भव्य शाकोत्सव का प्रबन्धकिये थे ।

इसके मुख्य यजमान प.भ. कांतिभाई रामदास पटेल (डांगरवा) तथा श्री महेन्द्रभाई परसोतमभाई पटेल (डांगरवा) परिवार उपस्थित रहे । इस उत्सव में प.पू.अ.सौ. बड़े गद्दीवालेश्री विशेष रुप से आकर यजमान परिवार के बहनो और समस्त सत्संगी बहनो को दर्शन आशीर्वाद दिये । प्रासंगिक सभा में जेतलपुरधाम के पू. शास्त्री पी.पी. स्वामीने अलौकिक कथामृत का पान कराये । नारणपुरा के पू. महंत स्वामी एवं माधव स्वामी के प्रेम से कई धामो से विशाल संख्या में आये थे । मेयरश्री गौतम शाह, राजस्व मंत्री कौशिकभाई पटेल आदि राजकीय व्यक्ति उपस्थित थे । धर्मकुल के संकल्प अनुसार इस उत्सव में ६००० हजार गरीबो को महाप्रसाद खिलाया गया ।

पूरे उत्सव में हरिद्वार मंदिर के महंत मुकुंद स्वामी के देख-रेख में नारणपुरा मंदिर के पार्षद, ब्राह्मण, नारणपुरा युवक और महिला मंडल, घाटलोडिया, नवा वाडज, राणीप, न्यु राणीप, एप्रोच, कांकरिया, निकोल, अंजलि, विसनगर, कलोल, रडु, करजीसण, सायोना सीटी, नारणपुरा गाँव युवक मंडल, कच्छी लेउवा पटेल के बच्चे तत्परता से सेवा प्रदान किये । भुज के शा. उत्तम स्वामी अति सुंदर सभा का संचालन किये । प्रेम स्वामी भी सुंदर सेवा दिये । महंत स्वामीने आगामी २०१९ रजत जयंती समारोह की रुपरेखा बताये । श्री नरनारायणदेव बाल मंडल-युवक मंडल द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ । शाकोत्सव में २५० छोटे बडे यजमान बने थे ।

<u>आगामी रजत जयंती का आयोजन</u>

ता. १५-१-१८ से ता. १२-५-१८ ऋषिकेश में श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा, ता. १७-२-१८ रविवार नारणपुरा मंदिर में जेतलपुर धाम पैदल यात्रा, ता. २४-२-१८ रविवार भुज धाम १२ घंटे का अखंड धुन, ता. ४-३-१८ रविवार मूली धाम में १२ घंटे अखंड धुन ।

(विशाल भगत - नारणपुरा मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री महाप्रसादीभूत ज्ञानदायी शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञानुसार तथा मूली मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से मूली मंदिर की महाप्रसादीभूत ज्ञानदायी ता. २३-१२-१७ दिन शनिवार को विशाल शाकोत्सव मनाया गया । मूली क्षेत्र के हजारो हरिभक्तो ने शाकोत्सव का लाभ उठाया तथा धन्यता को प्राप्त हुए । इस उत्सव में कई धामो से संत-सांख्ययोगी बहने भी आयी थी । समस्त प्रबन्धकोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की देख-रेख में मूली क्षेत्र के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने किया था । इस सभा का सुंदर संचालन प.भ. शैलेन्द्रसिंह झाला ने किया थआ । अन्य सेवा में व्रज स्वामी,

हरिकृष्ण स्वामी, भरत भगत और प्रवीण भगत आदि जुड गये थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी उत्सव - रंगोत्सव

मूलीश्री राधाकृष्ण देव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूलीधाम निवासी महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव श्री हरिकृष्ण महाराज का १९५ वाँ वार्षिक उत्सव महासुद-५ वसंत पंमची को ता. २२-१-१८ सोमवार के दिन पूरे उत्साह से मनाया।

पाटोत्सव अवसर पर त्रिदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा स.गु.सा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी वक्ता स्थान पर थे . संहिता पाठ के वक्ता स.गु. घनश्याम स्वामीजी थे।

पाटोत्सव अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गद्दीवाले श्री आये थे। महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से पूर्ण पाटोत्सव कथा के यजमान प.भ. भगवानजीभाई माधवजीभाई परमार (अंबाला सुरत हालार) परिवारने दुर्लभ लाभ प्राप्त किये।

प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकोरजी को अन्नकूट आरती श्रीहरि यज्ञ की पूर्णाहुति विधिवत सम्पन्न हुई।

५०००० पचास हजार से अधिक हरिभक्तो का समुह आया था। कई धामो से सैंकडो संत और सांख्ययोगी बहने भी आयी थी।

सभा में श्री शिक्षापत्री ग्रंथ और पू. स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी की प्रतिमा का पूजन बड़े संतो द्वारा हुआ था। गुजरात के प्रसिद्ध कलाकार राष्ट्रपति पुरस्कार के विजेताश्री योगेशभाई गढवी द्वारा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी और स.गु. देवानंद स्वामी रचित दोहा-छंद की सभा बुलाई गई . विशाल सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री श्री राधाकृष्णदेव और नरनारायणदेव पर दृढ विश्वास रखने पर बल दिये।

दोपहर १२ बजे प्रत्येक वर्ष की तरह परंपरागत श्वेत वस्त्रो में सुंदर साफा बांधकर प.पू. लालजी महाराजश्री बिराजित हुए रंग खेले। जहाँ तक नजर डाले हजारो लोग केसुडे के रंग से रंगे गये। सभा संचालन प.भ. शैलेन्द्रसिंह झालाने किया । पूरी भोजन व्यवस्था कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से सभी हरिभक्तो ने किया। अन्य सेवा में महंत स्वामी मुकुंद स्वामी (हरिद्वार), व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, जे.के. स्वामी, पा. भरत भगत आदि लोग रहे थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यामनगर (हलवद) पाँचवा पाटोत्सव

मूली निवासी श्री राधाकृष्णदेव महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यामनगर (भाईयो-बहनोका) ५ वाँ वार्षिक उत्सव ता. ६-१-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से विधिवत सम्पन्न हुआ था।

श्रीजीस्वरुप स्वामी की प्रेरणा से समस्त आयोजन हुआ था । तीर्थास्थानो से संत और सांख्ययोगी बहने भी आयी थई । प.पू. महाराजश्री दोनो मंदिर में ठाकोरजी का अन्नकूट और आरती किये थे। प्रासंगिक सभा में १०००० हजार से अधिक हरिभक्तोने भगवान श्रीहरि को सर्वोच्च और श्रीहरि के आज्ञा का पालन तथा आशीर्वाद प्रदान किये। मंदिर के कोठारी परसोतमभाई और अरजणभाई का सुंदर प्रयास था। मोरबी के मनोजभाई उलीयावाला की सुंदर सेवा प्राप्त हुई । मोरबी मंदिर के महंत स्वामीजीने समस्त प्रबन्धकिये थे। (प्रति. अनिल दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा का शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से पूजारी स्वामी नारायणदासजी (ध्रांगध्रा मंदिर के महंत) की प्रेरणा से ध्रांगध्रा के सभी हरि भक्तो के साथ एवम् सहयोग से ता. ३०-१२-१७ को दिव्य शाकोत्सव मनाया गया । तीर्थस्थानो से मूली क्षेत्र से आये संतोने कथा का लाभ दिये थे।

सभा का संचालन नटुभाई पूजारा ने किया था । नरसीपरा, श्री नरनारायण युवक मंडल ने अच्छा सहयोग दिया। (प्रति. अनित दूधरेजीया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन (अमेरिका) श्रीहरिबल गीता पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने ह्युस्टन टेक्सास श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर में पवित्र खरमास में १९-१२-१७ से २३-१२-१७ तक प्रतिदिन शाम को ५-३० से ८-३० श्रीहरिबल गीता पारायण शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी और

पार्षद महेन्द्र भगत (बायरन) ने किया था । जिसके मुख्य यजमान आशितभाई और मोनाबेन त्रिवेदीजी थे । दूसरे भी हरिभक्त साथ में यजमान बनकर लाभ लेकर धन्य हुए । भक्त कथा सुनकर कृतार्थ हुए । सभा में सभी यजमानो का फूल-माला से सम्नान किया गया । मंदिर की तरफ से सुंदर व्यवस्था हुई थी । (प्रविण शाह)

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर खरमास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर कोलोनिया में खरमास में प्रात: श्रीहरि नाम स्मरण धुन, कीर्तन, कथा और भगवान श्रीहरि को दिव्यवस्त्र पहनाकर विद्यालय में अध्ययन करने जाने हेतु का दर्शन करवाया गया । कई यजमानोने सेवा किया । जिसका मंदिर द्वारा सम्मान किया गया । अपने कोलोनिया मंदिर में सत्संग की सुंदर प्रवृति सदैव चलती रहती है । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप खरमास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने नरनारायण स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर पारसीप की न्युजर्सी में ं पवित्र खरमास में प्रतिदिन सुबह ठाकोरजी को नित नये सुदंर श्रृंगार करके विद्यालय जाने का दर्शन कराया गया । इसके पश्चात धुन, बालभोग और प्रसाद वितरण किया गया । महंत शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी सुंदर कथा किये । महंत स्वामीजीने सभी यजमानो हरिभक्तो का फुलहार से सन्मान किये । आगामी कार्यक्रम की सूचना के बाद सभी को प्रसाद खिलाया गया । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्यो

श्री स्वामिनारायण मंदिर घनश्यानगर (मूली-मोरबी क्षेत्र) पाटोत्सव अवसर में महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी की प्रेरणा से कुल ७ और मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर वसंत पंचमी उत्सव के समय पू. महंत स.गु. श्यामसुंदरदासजी की प्रेरा से ४ आजीवन सदस्य हुए है । (प्रतिनिधिश्री अनिल दुधरेजीया - ध्रांगध्रा)

प.पू. लालजी महाराजश्री की विशेष प्रेरणा से और आज्ञा से श्री स्वामिनारायण अंक के प्रतिनिधिआजीवन सदस्य बने इसमें विशेष रुचि ले । ऐसा विशेष अनुरोधकिये है ।

संप्रदाय के गौरव

श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के प्रति निष्ठावान नवयुवक श्री वेणुगोपाल हितेन्द्रभाई पटेल ने गुजरात विश्वविद्यालय में से "Study of Divorce Issues of Hindu - Strong Bonding to Seperation" विषय उपर महाशोधनिबंधResearch Work प्रस्तुत करके Law Faculty विधिसंकाय से PHD की उपाधिप्राप्त किये । वे इस समय गुजरात हाईकोर्ट में आसिस्टेन्ट गर्वनमेन्ट प्लीडर के पद पर कार्यरत है । विशेष बात यह है कि ये थीसिस उन्होने अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को अर्पण किये है । व्यवसायिक कार्य में भी भगवान को आगे रखकर इस सिद्धि प्राप्ति हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने आंतरिक आशीर्वाद देकर धन्यवाद प्रेषित किये है । खुशी भी व्यक्त किये है ।

सभी हरिभक्तो को ज्ञात हो कि आज के बीस वर्ष पूर्व यह बालक प.पू. बड़े महाराजश्री केनिवास स्थल पर रहकर विद्यालय का गृहकार्य करता था । उसी समय फोटो खीचकर तथा उस पर हस्ताक्षर करके प.पू. बड़े महाराजश्रीने भविष्य वाणी किये थे । ये अधिक अध्ययन करेगा । इस महापुरुष के आशीर्वाद के प्रताप से यह आज ३२ वर्ष की उम्र में उच्च शैक्षणिक योग्यता प्राप्त किये है । ये स्वयं यह नवयवुक कहता है ।

सभी संतो, महंतो ने उसे आशीर्वाद देकर खुशी व्यक्त किये ।

॥ श्रीजी स्वामी कहे सुसंत अमने, विद्याभमे ते गमे,
इस लिये प्रेम पूर्वक प्रतिदिन पढे, विद्या आष को
विशेष बनाये ॥

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) बोरणा (मूली क्षेत्र) गाँव के नवीन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) अंजली (अहमदाबाद) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकोरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) मेहसाना मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकोरजी का अभिषेक करते संत वृंद । (४) नारायणघाट मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकोरजी के अन्नकूट के दर्शन तथा कथामृत के पान कराते हुए महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी । (५) भाऊपुरा (कलोल) मंदिर के दशाब्दी समारोह के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (६) जामफलवाडी (अहमदाबाद) रात्रिकालीन पंचान्ह पारायण अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की पूजा करते हुए यजमान । (७) सानंद में जेतलपुर के संतो द्वारा दिव्य शाकोत्सव । (८) टोरेन्टो (कनाडा) के मंदिर में दिव्य शाकोत्सव दर्शन ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

मूली मंदिर में वसंत पंचमी उत्सव हेतु मंदिर के चौक में हजारो की भीड के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री रंग में ढोले उस क्षण को कैमरा में कैद करते हमारे प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

दंढाव्य प्रदेश का उत्तर गुजरात का डांगरवा गाँव श्रीहरि के चरणो से पवित्र हुआ है।

सर्वावतारी परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के अनन्य शूरवीर भक्त डांगरवा गाँव के लोग प्रसिद्ध है। उस मे से क्षत्रीय शूरवीर पार्षदो और पाटीदार भक्तो में वेणीदासभाई और जतनबा का नाम सर्वोपरी है। जिसके प्रेम से अभिभूत होकर श्रीहरि करजीसण के रास्ते में मुडकर डांगरवा आये और महाराज की ईच्छानुसार जतनबा ने दूध-दहीं और मक्खन का ढेर लगा कर महाराज को अतिशय खुश कर दिया। जिसके कारण महाराज १८६९ में समग्र देश में भयानक अकाल पड़ा था। जतनबा को अक्षय अन्न का भंडार हो ऐसा उन्होने वरदान दिये थे। जिस में से अनाज निकालकर असंख्य अकाल पीडितो को अन्न दिये थे। अंत में सबको मोक्ष पद भी दिये। डांगरवा के भक्तो की भक्ति भावना के कारण महाराजने इस क्षेत्र के मनुष्यो को प्रदान किये है।

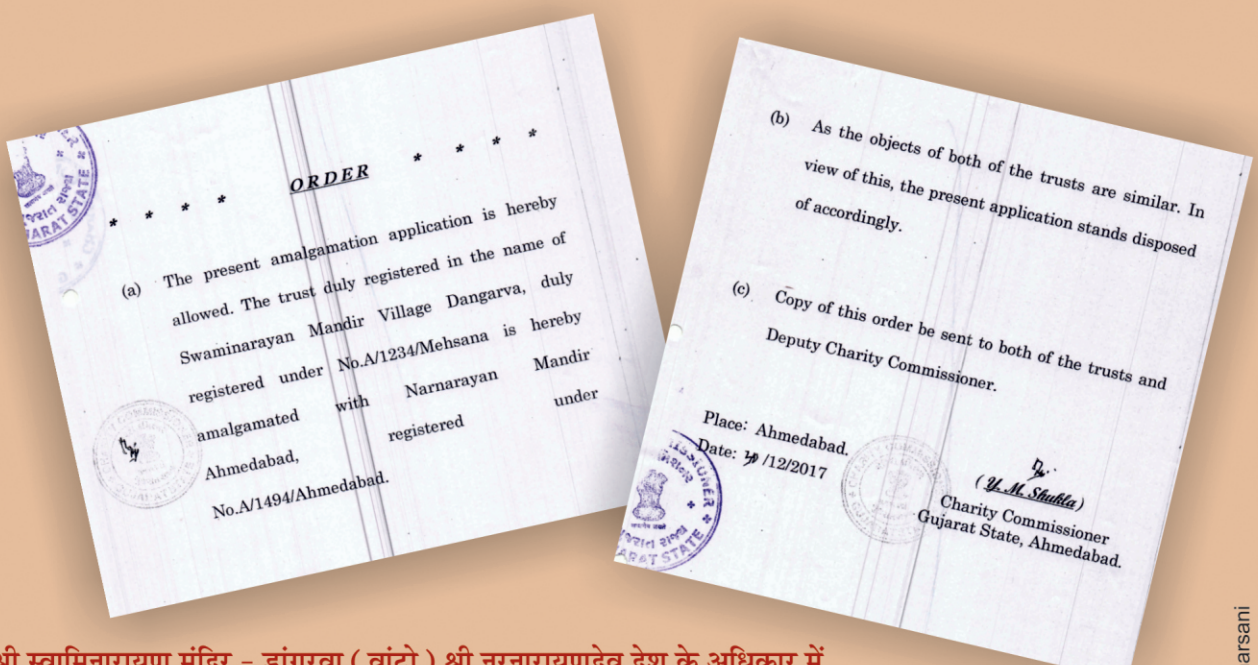

ORDER

(a) The present amalgamation application is hereby allowed. The trust duly registered in the name of Swaminarayan Mandir Village Dangarva, duly registered under No.A/1234/Mehsana is hereby amalgamated with Narnarayan Mandir under registered Ahmedabad, No.A/1494/Ahmedabad.

(b) As the objects of both of the trusts are similar. In view of this, the present application stands disposed of accordingly.

(c) Copy of this order be sent to both of the trusts and Deputy Charity Commissioner.

Place: Ahmedabad.
Date: 30/12/2017

(Y. M. Shukla)
Charity Commissioner
Gujarat State, Ahmedabad.

श्री स्वामिनारायण मंदिर - डांगरवा (वांटो) श्री नरनारायणदेव देश के अधिकार में श्री नरनारायण मंदिर ट्रस्ट रजी. नं. ए/१४९४/अहमदाबाद के साथ मिलाने के लिये गुजरात राज्य के माननीयश्री न्यास आयुक्त के आदेशानुसार, छाया प्रति

Praful Kharsani